आशा के वचन

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक:
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली 110049

Words Of Hope
By Sunny David

मुद्रक:
प्रिंट इण्डिया
मायापुरी, नई दिल्ली

विषय सूची

		पृष्ठ
1.	आपकी आशा क्या है ?	1
2.	सच्ची सुरक्षा	6
3.	दो रास्ते	11
4.	"उन्होंने आग को गम्भीरता से नहीं लिया"	16
5.	"उसकी पकड़ छूट गई"	21
6.	"क्या मेरा वचन आग सा नहीं है ?"	26
7.	परमेश्वर आज कैसे बोलता है?	31
8.	यदि सब ने सुसमाचार को मान लिया होता	36
9.	शिष्यता का दाम	40
10.	प्रायश्चित	45
11.	अनन्त वस्तुएं	50
12.	बपतिस्मा क्या है ?	55

रेडियो कार्यक्रम

सत्य सुसमाचार

रेडियो श्री लंका से 25, 31 और 41 मीटर बैंड पर अवश्य सुनिये ।

समयः

मंगलवार को रात 9:00 स 9:15 तक
बृहस्पतिवार को रात 9:00 से 9:15 तक
शुक्रवार को रात 9:00 से 9:15 तक
रविवार को दिन में 12:45 से 1:00 तक

प्रस्तुतकर्ता
मसीह की कलीसिया

वक्ताः
सनी डे विड

परिचय

भाई सनी डेविड, रेडियो श्री– लंका से प्रसारित होनेवाले हमारे कार्यकमों के वक्ता हैं तथा प्रस्तुत पुस्तक के लेखक भी हैं। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उन्होंने बाइबल के विभिन्न विषयों पर लिखा है। इन विषयों को जानने के लिये कि बाइबल उनके बारे में क्या शिक्षा देती है, मैं आपको यह पुस्तक पढ़ने का निमन्त्रण देता हूं।

इस पुस्तक में कुछ पाठ हमारे प्रतिदिन के जीवनों में होनेवाली घटनाओं पर आधारित हैं जैसे– "उन्होंने आग लगने की दुर्घटना को गंभीरता पूर्वक नहीं लिया" तथा "उसने अपनी पकड़ को खो दिया।" इन पाठों के अध्ययन के द्वारा हमें सत्य का पता चलेगा और तब हमारे पास यह चुनौती होगी कि हम जीवन का वास्तविक अर्थ जानने का प्रयत्न करें।

परमेश्वर आज अपने वचन अर्थात नए–नियम के द्वारा हमसे बोलता है । उसकी यह इच्छा नहीं है कि हम किसी प्रकार के दबाव में आकर उसकी आज्ञा को मानें, उसने हमें स्वयं चुनने की इच्छा दी है अर्थात हम उसको स्वीकार कर सकते हैं अथवा उसका इन्कार भी कर सकते हैं।

जो लोग उसकी आज्ञा मानकर उसको अपना लेते हैं, इसके लिये उनको एक दाम चुकाना पड़ेगा यानि अपने जीवन के द्वारा सदा उसकी सेवा करना तथा उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहना।

आपकी आशा क्या है? क्या आपकी कोई आशा है ? क्या आपने प्रभु की आज्ञा को मान लिया है ? क्या आप अभी उसके प्रति विश्वासयोग्य बने हुए हैं? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनके विषय में आपको गंभीरता से विचार करना है।

जे० सी० चोट

आपकी आशा क्या है ?

बाइबल की पुस्तकों को लिखवाने में परमेश्वर ने जिन चालिस लोगों को प्रेरणा दी थी उन में से एक का नाम सुलैमान था। सुलैमान एक बड़ा ही अनुभवी और बुद्विमान राजा था। राजाओं के वृत्तांत की पुस्तक में हमें सुलैमान की महानता और वैभव की एक झलक मिलती है । कहा जाता है कि सुलैमान के शासनकाल में चांदी का तो कोई मूल्य ही नहीं था । और उसके राज्य की प्रजा के लोग इतने खुशहाल थे कि उन्हें किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं थी। सुलैमान इतना अधिक बुद्विमान था कि उसकी बातें सुनने के लिये बड़ी–बड़ी दूर से राजा–महाराजा आया करते थे । सुलैमान ने बड़े–बड़े महल बनवाए थे और बड़ी–बड़ी इमारतें बनवाई थीं– और एक जगह वह अपने बारे में कहता है, कि दुनिया की कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मैं ने अपने लिये प्राप्त नहीं किया था। परन्तु जैसे–जैसे सुलैमान की आयु बढ़ती गई, वह इस निष्कर्ष पर पहुँचने लगा, कि इन्सान चाहे दुनिया में कितनी भी चीज़ें क्यों न इकट्ठी कर ले, और चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो जाए, अंत में उसे कोई लाभ नहीं होगा। सुलैमान आगे चलकर एक उपदेशक बन गया था , और उसने सभोपदेशक नाम की पुस्तक को लिखा था, जिस में वह लिखकर एक जगह यूँ कहता है, "कि व्यर्थ ही व्यर्थ है, व्यर्थ ही व्यर्थ ! सब कुछ व्यर्थ है । क्योंकि उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर करता है , उसको क्या लाभ होता है ?" (सभोपदेशक १२,३)।

राजा सुलैमान की इस बात में एक बहुत बड़ा अर्थ है, और एक बहुत बड़ी शिक्षा है। आज संसार में सभी लोग किसी न किसी काम में व्यस्त हैं। कोई ज़मीन खरीदने की सोच रहा है, और कोई मकान बनवा रहा है । सभी लोग कुछ न कुछ करने में लगे हुए हैं। पर उस सब परिश्रम से, जिसे इंसान ज़मीन पर

करता है, अंत में उसे क्या लाभ होगा ? प्रभु यीशु ने इसी बात को एक जगह इस तरह कहा था कि, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" (मरकुस ८:३६) । जब इंसान इस धरती को छोड़कर जाता है, तो वह खाली हाथ जाता है, क्योंकि वह अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सकता । जो कुछ भी वह बनाता है– वह सब का सब वह हमेशा के लिये छोड़कर चला जाता है । उसे कोई लाभ नहीं होता । पर जो मनुष्य अपना सारा जीवन केवल सांसारिक वस्तुओं की खोज में ही व्यतीत कर देता है, वह अंत में न केवल संसार की वस्तुओं की ही हानि उठाता है पर वह अपने प्राण या अपनी आत्मा की भी हानि उठाता है । यहां हमें प्रभु यीशु की वह कहानी भी याद आती है, जिस में प्रभु यीशु ने एक बड़े ही धनी व्यक्ति का दृष्टांत देकर कहा था, कि जब उसके पास बहुत अधिक धन–सम्पत्ति हो गया था तो उसने अपने मन में कहा था, कि अब मैं जीवन भर सुख से रहूँगा । परन्तु उसी रात को परमेश्वर ने उस मूर्ख धनी से पूछा था, कि आज ही रात को तेरे प्राण तुझ से ले लिये जाएंगे, तब जो कुछ तूने परिश्रम करके अपने लिये इकट्ठा किया है, वह सब किसका होगा?

उस धनवान ने अपना धन केवल पृथ्वी पर ही इकट्ठा किया था– लेकिन अब वह उस सब को छोड़कर जा रहा था, और जहां वह जा रहा था वहां के लिये उसके पास कुछ भी नहीं था । किन्तु क्या ठीक ऐसा ही व्यवहार हम में से अधिकांश लोगों का नहीं है? हमारा सारा जीवन उन वस्तुओं की खोज में व्यतीत हो जाता है जो पृथ्वी की नाशमान वस्तुएं हैं । ज़िन्दगी भर हम उन चीज़ों को इक्ट्ठा करने में और बनाने में लगे रहते हैं जो अंत में हमारे किसी काम नहीं आएंगी । पर वे चीज़ें जो आत्मिक और अनन्त हैं, वे जो हमेशा बनी रहेंगी, उन पर हम कोई ध्यान नहीं देते । सुनिये कि प्रभु यीशु ने क्या कहा था, यीशु ने कहा था, कि "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा ना करो जहां कीड़ा और

काई बिगाड़तें हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।" (मत्ती ६:१६,२०)।

पुराने ज़माने में राजाओं के महलों में कुछ मूर्ख हुआ करते थे, उन्हें दिल बहलाने के लिये रखा जाता था। एक बार एक राजा ने अपने एक मूर्ख की एक मूर्खतापूर्ण बात से आनन्दित होकर उसे अपने पास बुलाया, और उसे अपनी छड़ी देकर कहा कि यह मैं तुम्हें इसलिये देता हूं कि तुम मेरे राज्य में सबसे बड़े मूर्ख हो, और अगर भविष्य में तुम्हें कोई अपने से भी बड़ा मूर्ख मिल जाए तो यह छड़ी उसे दे देना। कई साल बीतने पर एक बार ऐसा हुआ कि वह राजा बड़ा ही सख्त बीमार पड़ा और उसकी हालत दिन–ब–दिन बिगड़ती ही चली गई। जब वह राजा मरने पर था, तो एक दिन उसका वही मूर्ख उससे मिलने गया। उस मूर्ख ने राजा से पूछा, कि अब तो आप इस संसार से जाने ही वाले हो, किन्तु क्या आपने यहां से जाने की तैयारी कर ली है? आप किस आशा के साथ इस संसार से जा रहे हो? क्या जहां आप जा रहे हो,वहां भी आप ऐसे ही शान–ओ–शौकत से रहोगे? क्या आप जानते हो कि आप कहां जा रहे हो ? जब राजा ने अपने मूर्ख की बातों का जवाब सिर हिलाकर नहीं में दिया, तो उस मूर्ख ने झट राजा की दी हुई छड़ी निकालकर राजा के हाथ में थमा दी, और उसने राजा से कहा कि जिसे मैं इतने वर्षों से ढूंढ रहा था वह आज मुझे मिल गया है!

पवित्र बाइबल कहती है, कि जो लोग प्रभु यीशु में मरते हैं वे धन्य हैं, क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे, और उन के काम उनके साथ हो लेंगे। (प्रकाशितवाक्य १४:१३)। आज मैं आप के सामने इस बात को रखना चाहता हूं कि अगर आज आप प्रभु यीशु मसीह के भीतर हैं तो आप इस संसार से जाने को तैयार हैं। और जहां आप जाएंगे वहां आप अपने परिश्रमों से

आराम पाएंगे, और न सिर्फ़ यही, परन्तु आपके उन कामों का जिन्हें आप ने पृथ्वी पर रहकर किया था अंत नहीं होगा पर वे आप के साथ आप के पीछे चलेंगे ! यहां इन दो बातों में एक बहुत बड़ा अन्तर है, यानि वे सब लोग जो प्रभु यीशु मसीह के भीतर नहीं हैं वे जब इस संसार से जाते हैं, तो वे न केवल संसार की वस्तुओं की ही हानि उठाते हैं पर वे अपनी आत्मा की भी हानि उठाते हैं । पर जो लोग यीशु मसीह के भीतर हैं वे जब इस संसार से जाते हैं तो वे अपने परिश्रमों से आराम पाते हैं,और उनके काम उनके पीछे हो लेते हैं, और वे परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करके हमेशा की ज़िन्दगी पाएंगे । और इसका कारण यह है, कि यीशु मसीह उनके पापों का प्रायश्चित है । उन्होंने उसे अपने जीवनों में ग्रहण किया है और उसे अपना उद्धारकर्त्ता माना है । उन्होंने उस पर अपने सारे मन से विश्वास किया है और अपने सारे पापों से मन फिराकर उसकी आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया है । बाइबल कहती है, कि "तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है ।" (गलतियों ३:२७) ।

इसलिये, जो लोग यीशु मसीह के भीतर हैं वे यह जानते हैं कि इस संसार को छोड़कर वे कहां जाएंगें । क्योंकि वे अपना जीवन सांसारिक वस्तुओं की खोज में व्यतीत नहीं करते हैं परन्तु वे अपने जीवनों में सबसे पहिला स्थान परमेश्वर को देते हैं । ज़मीन पर इकट्ठा करने के विपरीत वे अपना धन स्वर्ग में इकट्ठा करते हैं । और इस प्रकार वे जानते हैं कि प्रभु में उनका परिश्रम व्यर्थ नहीं जाएगा । और यही आशा आज आप की भी हो सकती है, अगर आप अपने सारे मन से यीशु में विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को मानेंगे और अपना जीवन उसे दे देंगे । और वास्तव में अगर आप अपना जीवन प्रभु को दे देंगे तो फिर आगे को आप संसार की नाशमान वस्तुओं की खोज में नहीं रहेंगे, परन्तु तब आप उन चीज़ों की खोज में लग जाएंगे जो आत्मिक और अनन्त

हैं । क्योंकि प्रभु यीशु के पास आकर आपका जीवन बदल जाएगा ।

किन्तु, आपके जीवन की क्या आशा है? क्या आप की आशा केवल इसी जीवन तक सीमित है? या क्या आप यह कह सकते हैं, कि इस जीवन के बाद आप परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाएंगे? आपकी क्या आशा है ? बहुतेरे लोग आज अपने जीवन से तंग आ चुके हैं । उन्हें अपने जीवन में कुछ आशा नज़र नहीं आती । बहुतेरे ऐसे हैं जो यह जानते ही नहीं कि पृथ्वी पर के इस जीवन के बाद उनका क्या होगा । लेकिन जो लोग उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह में हैं उन्हें विश्वास है कि जब उनका पृथ्वी पर का यह डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा, तो उन्हें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा आत्मिक घर मिलेगा जो शारीरिक नहीं परन्तु आत्मिक होगा । (२ कुरिन्थियों ५:१) । और उसमें वे हमेशा परमेश्वर के साथ निवास करेंगे । लेकिन आपकी आशा क्या है?

सच्ची सुरक्षा

आज का मनुष्य सबसे अधिक ध्यान अपनी सुरक्षा की ओर देता है। और इसके कई कारण हैं। एक तो आज का इन्सान अधिक जागरुक है, अधिक जानकार है। साहित्य, रेडियो, और टेलेविज़न जैसे माध्यमों के द्वारा आज इन्सान को बहुत सी बातों की सही जानकारी है। और क्योंकि मनुष्य अपने शरीर की तन्दरुस्ती चाहता है, इसलिये आज वह अपने खाने–पीने की तरफ़ भी ज़्यादा ध्यान देने लगा है। आज बहुतेरे लोग पानी को छानकर या उबालकर पीते हैं। पहिले वही लोग पानी को ऐसे ही पी लेते थे, क्योंकि पहले उन्हें इस बारे में सही जानकारी नहीं थी। फिर हम खाने–पीने की चीज़ों को देखते हैं, कई बार उनमें मिलावट की जाती है। लेकिन हम मिलावट की चीज़ें नहीं खाना चाहते हैं। हम खाने की हर एक चीज़ को बड़ी खबरदारी से खरीदना चाहते हैं – क्योंकि हम बीमार नहीं पड़ना चाहते। हमारी सरकार ने कई जगह ऐसे कार्यालय खोले हुए हैं जिनमें उन लोगों की शिकायत की जा सकती है जो खाने–पीने की चीज़ों में मिलावट करते हैं।

फिर, खाने–पीने के अलावा हम अपने घरों में भी सुरक्षा चाहते हैं। बहुत से लोग अपने घरों के आगे दीवारें बनवा लेते हैं। कुछ लोग अपने घरों के आगे तारें आदि लगवाकर अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध करते हैं। जब हम कहीं बाहर जाते हैं तो हम दरवाज़े में सिर्फ़ कुन्डा लगाकर ही नहीं चले जाते, पर हम कोई मज़बूत ताला लगाकर जाना चाहते हैं क्योंकि हमें अपने घरों की सुरक्षा का भी बड़ा ध्यान रहता है।

फिर, एक और प्रकार की सुरक्षा है, जिस पर हर एक इन्सान का ध्यान जाता है, और वह है भविष्य की सुरक्षा। हम अपने और अपने बच्चों की भविष्य की सुरक्षा के लिये कुछ करना चाहते हैं। कुछ लोग अपने परिवार के भविष्य को सुरक्षित करने के

लिये अपना जीवन बीमा करवा लेते हैं । अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिये लोग बैंकों और डाक–घरों में खाते खोलकर हर महीने कुछ पैसा बचाकर रखते हैं । अपने और अपने परिवार के भविष्य के लिये लोग घर बनवाते हैं, धन इकट्ठा करते हैं । कुछ माता–पिता ऐसे भी होते हैं जो भविष्य में अपने बच्चों की शादियों के लिये कुछ न कुछ पहिले ही से इकट्ठा करते रहते हैं । यानि, इन सब बातों से हम यह देखते हैं कि इंसान को अपने वर्तमान और भविष्य की सुरक्षा की सबसे अधिक चिन्ता रहती है और इस चिन्ता का कारण है शरीर । यानि सबसे अधिक चिन्ता, और लगभग सारी चिन्ता, मनुष्य को अपने शरीर और शरीर से सम्बंधित वस्तुओं की है । तौभी, सच्चाई यह है कि शरीर नाशमान है, और उसका अस्तित्व अनिश्चित है!

इस बात से हमें प्रभु यीशु मसीह की ये बातें याद आती हैं, उसने कहा था कि "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं । परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाडते हैं और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं । क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा । शरीर का दिया आंख है: इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अंधियारा होगा इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अंधकार हो तो वह अंधकार कैसा बड़ा होगा । कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वह एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा, तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते । इसलिये मैं तुम से कहता हूं" यीशु ने कहा था, "कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे ? क्या प्राण भोजन से और शरीर

वस्त्र से बढ़कर नहीं ? आकाश के पक्षियों को देखो वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं, तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है, क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते? तुम में कौन है जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? ————————इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी ।" (मत्ती ६:१६–२७,३३) ।

प्रभु यीशु की इन बातों से हमें आज यह शिक्षा मिलती है कि हम शारीरिक बातों की चिन्ता करना छोड़कर, सबसे पहले इस बात की तरफ़ ध्यान दें कि क्या हम ने अपने आप को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के योग्य बना लिया है या नहीं, और क्या आज हम उसके लेखे में धर्मी हैं या नहीं? प्रभु यहां यह नहीं कह रहा है कि अपने भविष्य के बारे में हम कुछ सोचें ही नहीं । न ही वह यह कह रहा है ,कि हम बैंक या डाक–घर में पैसा इकट्ठा न करें या अपने परिवारों की सुरक्षा का कोई प्रबन्ध न करें । बहुतेरे लोग यहां प्रभु यीशु की शिक्षा को गलत ढंग से समझ लेते हैं । परन्तु वास्तव में प्रभु यहां हमें यह सिखा रहा है, कि हम शरीर और शारीरिक वस्तुओं की चिन्ता करना छोड़कर अपनी आत्मा के उद्धार की ओर अपना ध्यान दें । क्योंकि यदि हम अपने पापों से उद्धार पाए बिना इस जगत से चले जाएंगें, तो हमारी आत्मा को नरक में जाने से कौन बचाएगा? सच्चाई यह है, कि मनुष्य का सारा जीवन शरीरिक बातों की चिन्ताओं में ही व्यतीत हो जाता है । एक –एक दिन हफ़्तों में बदल जाता है । और एक–एक हफ़्ता महीनों में बदल जाता है । और एक–एक महीना वर्षों में बदल जाता है । और इस से पहिले कि इन्सान को होश आए वह इस संसार से सदा के लिये चला जाता है । सदा के लिये !

और फिर जिन चीज़ों को हम अपनी सुरक्षा समझते हैं क्या वे वस्तुएं हमारी रक्षा कर पाती हैं? हां, शायद थोड़े समय के

लिये । परन्तु उसके बाद ? उसके बाद क्या होता है? यहां हमें उस धनवान की याद भी आती है जिसका ज़िक्र करके यीशु ने ही कहा था, कि उसने सारी ज़िन्दगी अपने लिये खूब धन–दौलत इकट्ठा किया था । रात–दिन वह इसी चिन्ता में लगा रहता था कि कैसे मैं और अधिक से अधिक धनवान बन जाऊं । और एक बार जब उसके पास धन–दौलत हो गया तो वह अपने मन मे सोचने लगा कि अब तो मेरे पास इतनी ज़्यादा दौलत हो गई है कि अगर मैं अपनी सारी उम्र बैठकर भी खाउंगा तो वह खत्म नहीं होगी । पर यीशु ने कहा था, कि वह आदमी इस बात से अंजान था कि उसी रात को उसकी मौत होनेवाली थी । वो नहीं जानता था कि उसी रात को उसकी आत्मा उसके उस शरीर को हमेशा के लिए छोड़कर चली जाएगी । उस शरीर को जिस के लिए उसने वह सब धन–दौलत इकट्ठा किया था । और ऐसा हुआ कि यकायक उसके कानों में यह आवाज़ सुनाई पड़ी कि अब यह किसका होगा ? क्या यह चीज़ें तेरे साथ जा सकती हैं? क्या इनके बल पर तू नरक से बचकर परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है? अब यह सब किसका होगा?

सो हम देखते हैं, कि असली और वास्तविक सुरक्षा संसार की चीज़ों में नहीं है । उनकी चिन्ता में जीवन व्यतीत करके हम अपने अपको वास्तव में सुरक्षित नहीं कर सकते । किन्तु, परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करके हम अपने आप को सच्चाई में सुरक्षित कर सकते हैं । परमेश्वर की बाइबल हमें यह बताती है, कि उसने अपने पुत्र यीशु मसीह में हमारे लिये अनन्त सुरक्षा का प्रबन्ध किया है । बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उसमें विश्वास लाए वह नरक में नाश न हो परन्तु स्वर्ग में अनन्त जीवन पाए । (यूहन्ना ३:१६) । परमेश्वर का पुत्र यीशु हम सब के पापों का प्रायिश्चत है । उस में होकर हम अपने पापों के दन्ड से मुक्त हो जाते हैं । इसीलिये बाइबल

कहती है,कि उसमें विश्वास लानेवाले नाश न होंगे, परन्तु हमेशा की ज़िन्दगी पाएंगे ।

सो क्या आप वास्तव में सुरक्षित हैं? क्या आपके परिवार सचमुच में सुरक्षित हैं ? क्या आप जानते हैं कि जब आप इस संसार से जाएंगे तो आप स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएंगे? आज अगर आप यीशु मसीह में विश्वास लाकर अपने सब पापों से मन फिराएंगे, और अपने सब पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेंगे तो उसमें आप को हमेशा की ज़िन्दगी की सुरक्षा मिल जाएगी । और तब आप निश्चित रुप से यह जान लेंगे कि आप भविष्य में कहां जाएंगे । सुरक्षा प्रभु यीशु मसीह में है । अगर आप उसके भीतर हैं तो आप सचमुच में सुरक्षित हैं आपका जीवन सुरक्षित है, आपकी आत्मा सुरक्षित है और आपका भविष्य सुरक्षित है । स्वर्ग पर वापस जाने से पहले उसने कहा था, कि तुम्हारा मन व्याकुल ना हो,तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो सो मुझ पर भी विश्वास रखो । मेरे पिता के घर मे बहुत से रहने के स्थान हैं,यदि न होते तो मै तुमसे कह देता,क्योंकि मै तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं । और यदि मै जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करुं तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा ,ताकि जहां मै रहूं वहीं तुम भी रहो । (यूहन्ना १४:१–३)

दो रास्ते

एक जगह बाइबल का लेखक हमारे सामने एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न रखता है; वह कहता है, "उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर करता है उसको क्या लाभ प्राप्त होता है" (सभोपदेशक १:३) मनुष्य का जीवन समस्याओं और कठिनाईयों से परिपूर्ण होता है । ज़मीन पर कोई ऐसा इन्सान नहीं है जिसे समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता । और कभी–कभी हमारी समस्याएं ऐसी जटिल बन जाती हैं कि वो हमें एक दो–राहे पर लाकर खड़ा कर देती हैं– जहां हमारे सामने सिर्फ़ दो ही रास्ते होते हैं जिनमें से एक को हमें चुनना पड़ता है । बाइबल में हम मूसा के बारे में पढ़ते हैं । मूसा का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था, लेकिन उसका पालन– पोषण एक राज–महल में हुआ था । पर जब मूसा बड़ा हुआ और उसे इस बात का पता चला कि जिस राजा का वह पुत्र कहलाता है वही राजा उसके लोगों पर अत्याचार कर रहा है,तो उसके सामने एक बहुत बड़ा सवाल आ खड़ा हुआ । और वह सवाल यह था, कि क्या वह राज–महल में रहकर ऐश की ज़िन्दगी बसर करे या फिर अपने लोगों के पास जाकर उन्हें राजा के अत्याचार से बचाए ? और बाइबल कहती है कि मूसा ने इस दूसरी बात को चुन लिया, यानि उस ने यह निश्चय किया कि वह राज–महल छोड़कर अपने लोगों के पास जाएगा और उनकी रक्षा करेगा ।

प्रभु यीशु ने एक बार एक नौजवान लड़के की कहानी सुनाकर कहा था,कि एक दिन वह अपने पिता के पास आया और उस से कहा ,कि पिता, सम्पत्ति का जो हिस्सा मेरा है वह मुझे दे दो क्योंकि मैं किसी और देश में जाकर रहना चाहता हूं । जब पिता के बहुत मना करने पर भी वह लड़का नहीं माना तो उसने सम्पत्ति का उसका हिस्सा उसे दे दिया, और वह लड़का अपना सारा धन लेकर एक दूर देश में जाकर रहने लगा । और वहां

उसने अपना सारा धन शराब,जुए,और बुरे कामों में उड़ा दिया । और एक समय ऐसा आया कि वह लोगों से भीख मांगने लगा । पर उसे भीख भी नहीं मिलती थी । तब बड़ी मुश्किल से उसे एक जगह सुअरों की देख–भाल करने का काम मिला । और कई बार भूख से तंग आकर अपना पेट भरने के लिए उसे उन्हीं फलियों को खाना पड़ता था जिन्हें सूअर खाते थे । यानि उसका जीवन बड़ा ही दयनीय और पशुओं सरीखा हो गया और तब एक दिन उसे होश आया,और उसने अपने मन मे सोचा कि मैनें कितनी भारी ग़लती की है । वह सोचने लगा कि मेरे पिता के घर में तो नौकरों को भी इतना बढ़ियाँ खाना मिलता है,और मैं यहां सूअरों का सा जीवन व्यतीत कर रहा हूं । और तभी एकाएक उसने यह निश्चय किया, कि मैं अभी उठकर अपने पिता के पास वापस जाऊंगा और अपने पिता से क्षमा मागूंगा ,और कहूंगा कि हे पिता तू मुझे अपने यहां एक नौकर की तरह ही रख ले । वह अपनी मर्ज़ी के गन्दे रास्ते से तंग आ चुका था, सो वह अपने पिता के पास वापस चला गया ।

अक्सर हम सबके जीवनों में कहीं न कहीं कभी–न–कभी ऐसा मौका आता है जहां हमें दो रास्तों में से किसी एक को चुनना पड़ता है । हमें फ़ैसला करना पड़ता है कि क्या हम सच बोलकर नुक्सान उठा लें, या झूठ बोलकर लाभ उठा लें ? क्या हम सबसे पहले अपनी खुशी को पूरा करें,या वह काम करें जिससे परमेश्वर प्रसन्न होगा ? क्या हम अपने धर्म के काम लोगों को दिखाने के लिए करना चाहते हैं,या हम अपने कामों से परमेश्वर की प्रशंसा करना चाहते हैं? हमारे जीवनों में पहला कौन है ? मैं,या परमेश्वर ? किस की इच्छा पर हम चल रहे हैं ? क्या हमारा जीवन केवल उन्हीं वस्तुओं की खोज में व्यतीत हो रहा है जो नाशमान है, या क्या हम उन वस्तुओं की खोज में हैं जो अनन्त जीवन तक ठहरती हैं ? (यूहन्ना ६:२७) क्या हमारी जिन्दगियों से परमेश्वर की इच्छा पूरी हो रही है,या क्या हम

अपना जीवन संसार के लिए ही व्यतीत कर रहे हैं? "तुम", प्रभु यीशु ने कहा था, "परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते ।" (मती ६:२४)

इस जीवन में आपकी क्या आशा है ? इस ज़िन्दगी में आपका क्या उद्देश्य है ? इस पृथ्वी पर ज़्यादातर लोग आज अपना जीवन केवल ज़मीन की नाशमान वस्तुओं को ही प्राप्त करने में बिता रहे हैं । उनके जीवन की आशा केवल इसी जगत तक सीमित है । उनके जीवन का उद्देश्य सिर्फ कमाना, खाना,बनाना,और पहिनना है । वे एक ऐसे रास्ते पर चल रहे हैं जिसका अन्त बड़ा ही भयानक है । प्रभु यीशु ने कहा था कि सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है, और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं । क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं । (मत्ती ७:१३,१४) ।

चौड़ा या चाकल मार्ग वह रास्ता है जिस पर इन्सान खुद अपनी मर्ज़ी से चलता है और सकरा या तंग रास्ता वह है जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को दिया है । और इन दोनों रास्तों में एक बहुत बड़ा अन्तर यह है, यीशु ने कहा था, कि जबकि चौड़े मार्ग पर चलनेवाले अनन्त विनाश में प्रवेश करेंगे दूसरी ओर जो लोग संकरे मार्ग पर चलते हैं वे अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे । सकरे मार्ग पर अधिकांश लोग इसलिऐ नहीं चलते क्योंकि वह सकरा और तंग है– यानि उस पर बड़े ही खबरदार होकर और सम्भलकर चलना पड़ता है,जिस तरह से कोई रस्सी तानकर उस पर चलता है । उस में चोट लगने का खतरा है,ज़ख्मी होने का खतरा है , और नुक्सान का भय है । इसलिये यह चुनाव सभी लोग नहीं करते । पर मूसा के बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि उसने राजा के महल में थोड़े दिनों के सुख भोगने से बेहतर इस बात को चुन लिया था कि वह परमेश्वर के लोगों के साथ दुख उठाएगा

क्योंकि उसकी आंखें उस विशाल प्रतिफल को पाने की ओर लगी हुई थीं जो उसे परमेश्वर की ओर से मिलना था । प्रभु यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा था कि प्राण देने तक मेरे प्रति यदि तुम विश्वासी बने रहोगे तो मैं तुम्हें जीवन का मुकुट दूंगा । (प्रकाशितवाक्य २:१०) स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने भी मनुष्य के स्वरुप में आकर, अनेक दुख उठाए थे, क्योंकि वह सकरे मार्ग पर चलना चाहता था । परमेश्वर की मर्ज़ी को पूरा करने के लिए उस ने निर्दोष होते हुए भी क्रूस की मृत्यु को स्वीकार कर लिया था । परमेश्वर की इच्छा पर चलना ही वास्तव में सकरे मार्ग पर चलना है । और आज जो लोग परमेश्वर के सकरे मार्ग पर चलते हैं उनके पास यह महान आशा है, कि जब उनका पृथ्वी पर का यह जीवन समाप्त हो जाएगा तो वे स्वर्ग में उस जीवन में प्रवेश करेंगे ,जो हमेशा का जीवन है – जहां वे हमेशा परमेश्वर के साथ रहेंगे ।

प्रभु यीशु ने कहा था, कि "मार्ग, और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता ।" (यूहन्ना १४:६) मित्रों, आज परमेश्वर की मर्ज़ी यह है कि आप और मैं उसके एकलौते पुत्र यीशु में विश्वास लाएं और यह मानें कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है । परमेश्वर की मर्ज़ी यह है कि हर एक इन्सान अपने–अपने पापों से मन फिराए और अपने सब गुनाहों की मुआफ़ी के लिये मसीह के नाम से बपतिस्मा ले । और परमेश्वर की मर्ज़ी यह है कि मसीह को हम अपने जीवनों का आदर्श बनाएं और उसका सा जीवन व्यतीत करने का यत्न करें जिसमें त्याग था,बलिदान था और हर एक के लिए प्यार था ।

सो,आज आप के सामने दो मार्ग हैं । एक तो संसार का चौड़ा मार्ग है, जो मनुष्य को हमेशा के विनाश की तरफ़ ले जाता है, और दूसरा परमेश्वर का सकरा मार्ग है, जो इन्सान को स्वर्ग मे हमेशा के जीवन में पहुंचाता है । कौन से रास्ते को आज आप

अपने लिए चुनेंगे ? मेरी आशा है कि आज आप परमेश्वर के मार्ग को चुनकर उस पर चलने का फ़ैसला करेंगे । क्योंकि परमेश्वर की बाइबल कहती है, कि मनुष्य जैसा बोएगा, वैसे ही वह काटेगा भी । (गलतियों ६:७) । संसार के लिए जीना छोड़कर परमेश्वर के लिए जीना आरम्भ करें अपनी मर्ज़ी पर चलना छोड़कर परमेश्वर की मर्ज़ी पर चलना शुरु करें । शरीर की चिन्ता छोड़कर आत्मा की फ़िक्र करें । और सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करें । इस विशाल निश्चय को आप कब करेंगे?

"उन्होंने आग को गम्भीरता से नहीं लिया"

मेरा विश्वास है कि अभी कुछ ही समय पहले आप ने उस भयंकर आग की घटना के बारे में ज़रुर सुना होगा जो दिल्ली के अंसल भवन में लगी थी । और शायद आप में से बहुत से लोगों ने उस भयानक दृश्य को अपने टी०वी० सेट्स पर भी देखा होगा । कहा जाता है कि उस आग में कई लोगों की जानें गई थीं और सैकड़ों लोग ज़ख्मी हो गए थे । जून उन्नतीस, १९८७ को जिस दिन वह भयंकर आग लगी थी उस दिन मैं प्रचार के काम से दिल्ली से बाहर गया हुआ था । लेकिन जब मैं वापस दिल्ली आया तो लोगों ने मुझे उस दर्दनाक दुर्घटना की अनेकों बातें बताई । और तभी जब मैं अख़बार पढ़ रहा था, तो अचानक मेरा ध्यान एक समाचार पत्र के इस शीर्षक पर गया कि "उन्होंने आग को गम्भीरता से नहीं लिया ।" उस लेख में पत्रकार ने उन लोगों का वर्णन किया था , जिन्हें अंसल भवन में लगी आग के बारे में सबसे पहले खबर दी गई थी । वे लोग दफ़्तर में बैठकर काम कर रहे थे, लेकिन जब उन्हें आग के बारे में बताया गया था तो उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया । उन्होंने सोचा था कि छोटी सी आग है और जल्दी ही बुझा दी जाएगी । किन्तु, यह उनकी भूल थी ! क्योंकि कुछ ही पलों मे उस आग ने एक बड़ा ही भयंकर रुप धारण कर लिया था और वह पूरे अंसल भवन में फैल गई और तब सब लोग अपनी–अपनी जान बचाने के लिए इधर–उधर भागने लगे और उस भगदड़ में बहुतेरे लोग ज़ख्मी हो गए और कुछ की जानें तक चली गई, पत्रकार का कहना था, कि जो लोग मरे थे और जो लोग ज़ख्मी हुए थे, उन्होंने आरम्भ में आग को गम्भीरता से नहीं लिया था । लेकिन अगर वे चेतावनी पाते ही भवन से बाहर निकल जाते तो वे बच सकते थे । कितने दुःख की, और कितने शोक की बात है यह ।

काश, उन्होंने खबर मिलते ही उसे गम्भीरता से ले लिया होता ।

पर जब मैं उस समाचार पत्र को पढ़ रहा था तो मेरा ध्यान आदम और हव्वा की तरफ गया । बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को चेतावनी देकर कहा था, कि जिस दिन वे उसकी आज्ञा का उल्लंघन करेंगे उसी दिन वे अवश्य मर जाएंगे, अर्थात वे उस से अलग हो जाएंगे । पर क्या आदम और हव्वा ने परमेश्वर की बात को गम्भीरता से लिया था ? नहीं । ऐसे ही मेरा ध्यान उस समय उन लोगों की तरफ भी गया जो नूह के दिनों में रहते थे । बाइबल कहती है, कि उस समय पृथ्वी पर पाप के बहुत अधिक बढ़ जाने के कारण, परमेश्वर ने एक जल–प्रलय के द्वारा मनुष्यों को पृथ्वी पर से मिटा डालने का निश्चय किया था । उस वक्त परमेश्वर ने ज़मीन पर सिर्फ नूह को ही धर्मी पाया था । सो अपनी योजना को नूह पर प्रकट करके परमेश्वर ने उस से कहा था कि तू अपने और अपने परिवार के बचाव के लिए एक जल–पोत बना ले । पर फिर, हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने तुरन्त जल प्रलय को नहीं भेजा था, पर वह सौ वर्षों से भी अधिक समय तक धीरज धरकर ठहरा रहा कि लोग अपने पापों से मन फिरा लें । और इस समय के बीच में नूह अपना जहाज़ बनाता रहा –और सभी लोगों को बताता रहा कि परमेश्वर क्या करने जा रहा है –और वह उनसे कहता रहा कि इस से पहले कि वह विनाश का दिन उनके ऊपर एकाएक आ जाए वे अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास लौट आएं । पर कितने लोगों ने नूह की बात को गम्भीरता से लिया था ? आप में से जिन लोगों ने बाइबल में से इस बात के बारे में पढ़ा है, आप जानते हैं कि उस वक्त एक भी इन्सान ने पाप से अपना मन नहीं फिराया था । उन्होंने नूह की बात पर विश्वास नहीं किया था उन्होंने परमेश्वर की चेतावनी को गम्भीरता से नहीं लिया था । और इसी कारण, बाइबल कहती है, कि वे सब के सब पृथ्वी पर नाश हो गए थे । इसी तरह से, बाइबल में हम

नादाब और अबीहू के बारे में भी पढ़ते हैं, और उन इस्त्राएलियों के बारे मे भी पढ़ते हैं जिन्हें परमेश्वर मिस्त्र के दासत्व में से निकालकर प्रतिज्ञा किए देश में ले जा रहा था । उन में से किसी ने भी परमेश्वर की बातों को गम्भीरता से नहीं लिया था और इसीलिए वे सब के सब नाश हो गए थे । लेकिन आज, आज हम सब स्वयं अपने बारे में सोचें कि हम परमेश्वर की बातों को कितनी गम्भीरता से लेते हैं ? क्या हम उसकी बातों पर विश्वास करते हैं ? क्या हम उसके बचन की पुस्तक में लिखी बातों को गम्भीरता से लेते हैं ? परमेश्वर की बाइबल में लिखा है :

कि इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है । क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा घर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रकाशित कर दी है । (प्रेरितों १७:३०,३१) । बाइबल कहती है, "क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्यायासन के सामने खुल जाए, ताकि हर एक व्यक्ति अपने–अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए" (२ कुरिन्थियों ५:२०) लेकिन कितनी गम्भीरता से आज आप परमेश्वर के वचन की इस बात को लेते हैं ? क्या आपने अपने हर एक पाप से, हर एक बुरी बात से, हर एक झूठे देवी –देवताओं से,और हर एक अधर्म के काम से अपना मन फिरा लिया है ? और यदि नहीं तो क्या आप परमेश्वर के न्याय के दिन का सामना करने को तैयार हैं? प्रभु यीशु ने कहा था , कि "जो विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उाद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास नहीं लाएगा वह दोषी ठहराया जाएगा ।" लेकिन कितनी गम्भीरता से आपने यीशु की इस बात को लिया है ? क्या आपने अपने सारे मन से उसमें विश्वास लाकर अपने पापों से उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा ले लिया है ? (मरकुस १६:१६) हकीकत यह है कि आज बहुत

से लोग इस बात को मज़ाक में उड़ाते हैं । कुछ लोग इस बात पर संदेह करते हैं । वे यीशु की इस बात को मानना नहीं चाहते । वे उसकी इस बात को गम्भीरता से नहीं लेते । वे पूछते हैं, कि क्या पानी में जाने से हमारा उद्धार हो जाएगा ? लेकिन मैं आप से पूछना चाहता हूं कि क्या परमेश्वर ने नूह और उसके खानदान को पानी के द्वारा नहीं बचाया था? (१ पतरस ३:२०,२१) और क्या परमेश्वर ने नामान के कोढ़ को पानी से दूर नहीं किया था ? (१ राजा ५) । और क्या यीशु ने एक जन्म के अन्धे की आंखो को पानी से नही खोला था ? (यूहन्ना ६) अगर यह सब सच है, तो फिर यह भी सच है कि जो यीशु में विश्वास करेगा और उसकी आज्ञा मानकर पानी मे बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा । (प्रेरितों २२:१६;८: ३६) क्योंकि यह परमेश्वर की आज्ञा है । पर हम में से कितने लोग परमेश्वर की इस आज्ञा को गम्भीरता से स्वीकार करते हैं ? बात वास्तव में यह है कि यदि हम परमेश्वर में सचमुच में विश्वास करते हैं तो हम उसकी प्रत्येक आज्ञा को भी मानेंगे चाहे वह आज्ञा हमें मूर्खतापूर्ण बात ही क्यों न लगे । परमेश्वर की बाइबल हमें यह चेतावनी देती है कि "धोखा न खाओ परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा । क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी कांटेगा" (गलतियों ६:६,७) बाइबल कहती है कि, "शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात व्यभिचार गन्दे काम,लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध , फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इनके ऐसे और काम हैं," बाइबल का लेखक कहता है, "कि इन के विषय मे मैं तुम को पहले से कह देता हूं कि ऐसे–ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे । पर आत्मा का फल प्रेम ,आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं और ऐसे–ऐसे

कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं है । और जो मसीह यीशु के हैं उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है ।" (गलतियों ५:१६–२४)

क्या आज आप परमेश्वर की बात मानकर अपना जीवन उद्धारकर्ता यीशु मसीह को देना नहीं चाहेंगे ? याद रखें कि परमेश्वर ने एक दिन नियुक्त किया है जिस में वह हर एक इन्सान का उसके कामों के अनुसार न्याय करेगा । अगर आज आप यीशु में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा मानकर अपने आप को उसे दे देंगे , तो वह आप को प्रत्येक पाप से शुद्ध कर देगा । ताकि न्याय के दिन आप परमेश्वर के सामने एक ऐसे व्यक्ति की तरह खड़े हो सकें जिसके पाप धुल चुके हैं और जिसका दण्ड भरा जा चुका है । लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि अगर आज हम परमेश्वर की बातों को गम्भीरता से नहीं लेंगे तो एक दिन उसका वचन ही हमें दोषी ठहराएगा । प्रभु यीशु ने कहा था कि, "जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नही करता, उसे दोषी ठहरानेवाला तो एक है अर्थात मेरा वचन जो न्याय के दिन उसे दोषी ठहराएगा ।" (यहून्ना १२:४८) ।

"उसकी पकड़ छूट गई"

बड़ी ही प्रसन्नता की बात है यह,कि हम सब एक बार फिर से परमेश्वर के वचन की बातों को सुनने के लिये तैयार हैं । परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखा है कि "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उसमे पिता का प्रेम नहीं है । क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमन्ड वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है । और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं , पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है ,वह सर्वदा बना रहेगा ।" (यूहन्ना २:१५–१७) आज आप के पास क्या है ? शायद आपके पास कोई ऐसी वस्तु या वस्तुएं हो सकती हैं जिन पर आप को घमन्ड है । पर, परमेश्वर की पुस्तक कहती है कि पृथ्वी पर की सब वस्तुएं एक दिन मिट जाएंगी पर जो इन्सान परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, जो इन्सान उसकी मर्ज़ी के अनुसार चलता है ,वह सर्वदा बना रहेगा । शायद आप किसी बिमारी से मर जाएं या शायद आप की मृत्यु किसी दुर्घटना में हो जाए या हो सकता है शायद आपकी मृत्यु अचानक ही हो जाए । लेकिन एक बात आप ज़रुर याद रखें, और वह यह है ,कि अगर आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तो आप को कोई नहीं मिटा सकता – मृत्यु भी आप का कुछ नहीं बिगाड़ सकती । क्योंकि यदि आप मरेंगे तो इस नाशमान संसार के लिए ही मरेंगे । परन्तु परमेश्वर के लिए आप उसमें होकर हमेशा बने रहेंगे । प्रभु यीशु मसीह ने एक बार कहा था कि "जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए , तौभी जीएगा । और जो कोई जीवता है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्त काल तक नहीं (यानि कभी नहीं) मरेगा ।" (यूहन्ना ११: २५,२६) । क्या आप यीशु

में विश्वास करते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र और आपके पापों का प्रायश्चित है ?

आप में से बहुतेरे लोगों ने अपने घरों में टेलेविज़न में वह दृश्य शायद देखा होगा जिसमें दिखाया गया था कि किस प्रकार एक आदमी ऊपर से नीचे गिरकर मर गया था । यह बात २६ जून १९८७ की है । उस दिन दिल्ली में एक बहुत ऊचीं बिल्डिन्ग में आग लग गई थी । सैकड़ों लोग अपनी जानें बचाने के लिये नीचे आने की कोशिश कर रहे थे । और इस कोशिश में बहुतेरे लोग ज़ख्मी हुए थे और कुछ मर भी गए थे । लेकिन जो आदमी नीचे गिरकर मरा था वह एक पाईप को पकड़कर उसके सहारे धीरे– धीरे पास ही बनी एक दूसरी बिल्डिन्ग मे जाने की कोशिश कर रहा था । पर अभी वह कुछ ही दूर जा पाया था कि अचानक उसकी पकड़ छूट गई और देख़ते ही देखते वह आदमी कुछ ही क्षणों में नीचे गिरकर मर गया था । कितना दर्दनाक था वह दृश्य । काश ,वह आदमी अपना साहस न छोड़ता । काश ,वह मज़बूती के साथ उस पाईप को पकड़कर धीरे–धीरे अपनी मंज़िल की ओर बढ़ता ही जाता । काश, उसकी पकड़ न छूटती ।

बाइबल में इब्रानियों की किताब में एक जगह यूं लिखा है कि, "इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु ,और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें । और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था,लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा । इसलिए उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद–विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो ।" (इब्रानियों १२:१–३) ।

आज हम एक ऐसे संसार में रहते हैं, जिस में हर जगह पाप विद्यमान है । पाप की मजदूरी, बाइबल कहती है, मृत्यु है ।

(रोमियों ६:२३) मृत्यु का अर्थ है अलग होना, यानि, जो इन्सान पाप करता है, वह परमेश्वर से अलग है, वह आत्मिक रुप में मरा हुआ है । लेकिन बाइबल में लिखा है, कि "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" अर्थात परमेश्वर हमें मृत्यु से बचाकर हमें अनन्त जीवन देना चाहता है । और वह अनन्त जीवन हमें उसके पुत्र मसीह यीशु में मिलता है । जो हम सब के पापों का प्रायश्चित बनकर क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ था । इसलिये जब हम मसीह यीशु में विश्वास ले आते हैं कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर चढ़ा था और पाप से अपना मन फिराकर उसकी आज्ञानुसार अपना जीवन व्यतीत करने लगते हैं, तो उसके द्वारा हमें यह आश्वासन मिलता है, कि ज़मीन पर अपनी यात्रा के अन्त में हम उसके द्वारा स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी पाएंगे ।

पर हम एक ऐसे जगत में रहते है जिसमें हर जगह पाप विद्यमान है । तो फिर किस प्रकार हम पाप से बच सकते हैं? किस तरह हम एक पवित्र और पापरहित जीवन व्यतीत कर सकते हैं ? बाइबल कहती है ,कि विश्वास के कर्त्ता और सिद्व करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहो । यीशु न केवल हमारे पापों का प्रायश्चित करने को मारा ही गया था, परन्तु उसने पृथ्वी पर एक ऐसा जीवन भी व्यतीत किया था जिसमें हमें अपने लिए एक आर्दश मिलता है । यीशु के जीवन का पालन करने से हमारा विश्वास दृढ़ होता है, और वह हमारे जीवन को सिद्व बनाता है । यीशु ने कहा था कि "मार्ग, सच्चाई, और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता" परमेश्वर स्वर्ग में है । और अगर हम स्वर्ग में जाना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम यीशु का अनुसरण करें । उसने पृथ्वी पर एक ऐसा जीवन व्यतीत किया था,जिसमें कोई भी पाप नहीं था । इसका अर्थ यह नहीं है,कि उसके सामने परीक्षाएं और बुराईयां नहीं आई थीं । और इसका अर्थ यह भी नहीं है कि वह परमेश्वर

का पुत्र होने के कारण पाप कर ही नहीं सकता था, अर्थात उसमें पाप करने की क्षमता नहीं थी । बाइबल कहती है, कि ज़मीन पर यीशु एक इन्सान बनकर आया था । वह हमारी ही तरह एक इन्सान था । और वह हमारी ही तरह सब बातो में परखा भी गया था, लेकिन क्योंकि वह अपने जीवन और अपने कामों से अपने पिता परमेश्वर को ही प्रसन्न करना चाहता था, इसलिए उसने त्याग और बलिदान करके दुख उठा–उठाकर एक ऐसा जीवन व्यतीत किया था जिसमें एक भी पाप या अधर्म नहीं था (इब्रानियों ४:१५;५:८,९) । वह अन्त तक अपने इस उद्देश्य पर दृढ़ रहा , और यहां तक कि उसने अपनी जान भी दे दी पर फ़िर भी वह अपने उद्देश्य से नहीं हटा, उसने अपना हियाव नहीं छोड़ा ।

और यही आज परमेश्वर हम से भी चाहता है । कि हम हर एक रोकनेवाली वस्तु और प्रत्येक उलझानेवाले पाप को दूर करके स्वर्ग की दौड़ में धीरज के साथ दौड़ें । और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें । इसका अर्थ यह है कि हम वैसा ही जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करें जैसा कि यीशु मसीह का था । वैसा ही स्वभाव रखें जैसा कि यीशु मसीह का था (फिलिप्पियों २:५) ऐसा करने से हमारे सामने कठिनाईयां तो ज़रुर आएंगी और हमें कई चीज़ों का बलिदान भी करना पड़ेगा, कई बार हमें दुख भी उठाने पड़ेंगे । पर इन सब बातों के अन्त में जो प्रतिफ़ल हमें मिलेगा, अर्थात स्वर्ग में अनन्त जीवन, उसके सामने ये सब चीज़ें कुछ भी नहीं हैं ।

पर बात धीरज और हियाव की है; अन्त तक पकड़े रहने की है । प्रभु यीशु ने कहा था, कि जो इन्सान अन्त तक विश्वासी बना रहेगा वही अनन्त जीवन का ताज पहनेगा । यह ठीक है, कि हमें यीशु में विश्वास लाना चाहिये । यह भी ठीक है कि हमें अपने पापों से मन फिराना चाहिए । और यह भी सही है कि हमें अपने–अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु की आज्ञा से

बपतिस्मा लेना चाहिए ताकि हमारे पाप क्षमा हो जाएं पर अगर हम प्रतिदिन उसके जीवन का अनुसरण नहीं करते, अगर हम उसे पकड़े नहीं रहते, अगर हम हर रोज़ उसके साथ नहीं चलते, और अगर हम वैसा ही स्वभाव नहीं रखते जैसा कि यीशु मसीह का था तो अन्त में हमारा किया सब कुछ व्यर्थ ठहरेगा । सो हम उसे न छोड़ें, उस पर भरोसा रखें और उस की ओर ताकते रहें । उसका सा जीवन व्यतीत करने की कोशिश करें और वैसा ही स्वभाव रखें जैसा यीशु मसीह का था । (फिलिप्पियों २:५–८) ।

"क्या मेरा वचन आग सा नहीं है ।"

बाइबल परमेश्वर के वचन की किताब है । यानि जिस किताब को हम बाइबल कहते हैं,उसमें लिखी सब बातें परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई थीं । एक जगह बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं परमेश्वर कहता है कि "क्या मेरा वचन आग सा नहीं है ?" (यिर्मयाह २३:२६) इस का अर्थ यह है कि जिस प्रकार आग में डालकर चीज़ों को निखारा और बनाया जाता है; जैसे कि सुनार सोने के साथ और लुहार लोहे के साथ करता है और जिस तरह आग से वस्तुओं को शुद्ध किया जाता है । वैसे ही परमेश्वर भी अपने वचन की बातों के द्वारा मनुष्य को पवित्र बनाकर उसे स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनाता है । परन्तु आग जिस प्रकार वस्तुओं को शुद्ध करती है; और चीज़ों पर निखार लाती है, वही आग कुछ अन्य वस्तुओं को नाश भी कर देती है । और ऐसे ही परमेश्वर का वचन भी है । जो लोग उसके वचन की बातों पर चलकर अपना जीवन बिताते हैं, उन्हें वह स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा । पर जो लोग परमेश्वर के वचन की बातों पर ध्यान नहीं देते हैं, उन्हें उसका वचन ही न्याय के दिन दोषी ठहराएगा, और वे नरक में हमेशा का दण्ड पाएंगे । सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि परमेश्वर का वचन आग के समान है । यानि उस में आग की सी खूबियां हैं । आग के बारे में हम बाइबल में और भी बहुत सी बातों को पढ़ते हैं । अगर आपने कभी बाइबल को पढ़ा है तो आप को याद होगा कि उत्पत्ति की पुस्तक में हम सोदोम और गोमोराह के नगरों के बारे में पढ़ते हैं । वहां के लोग इतने अधिक पापी हो गए थे कि परमेश्वर ने उन के ऊपर आकाश से आग और गन्धक बरसाकर उन्हें नाश किया था । (उत्पत्ति १९) ।

फिर बाइबल में हम उस झाड़ी के बारे में पढ़ते हैं, जिसे मूसा ने देखा था । वह झाड़ी जल तो रही थी परन्तु भस्म नहीं

हो रही थी । उस झाड़ी में लगी आग की लौ के द्वारा परमेश्वर ने मूसा को दर्शन दिया था । उस आग की झाड़ी के द्वारा परमेश्वर ने मूसा को यह विश्वास दिलाया था कि उस झाड़ी के बीच में से जो उस से बोल रहा है वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है । (निर्गमन ३) ।

और जब मूसा परमेश्वर के लोगों को उसकी सामर्थ से मिस्त्र में से बाहर निकाल लाया था तो बाइबल कहती है, कि "परमेश्वर उन्हें दिन को मार्ग दिखाने के लिये बादल के खम्भे में,और रात को उजियाला देने के लिये आग के खम्भे में होकर उनके आगे–आगे चला करता था ।" (निर्गमन १३:२१) ।

फिर हम बाइबल में नादाब और अबीहू नाम के दो याजकों के बारे में पढ़ते हैं । वे दोनों परमेश्वर की पुरानी व्यवस्था के अनुसार उसके मन्दिर में उपासना किया करते थे । परमेश्वर ने उन्हें बताया था, जैसे कि उसने आज हमें भी अपने नए नियम में बताया है कि, उन्हें उस समय उसकी आराधना किस तरह से करनी चाहिए थी । पर उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा न मानकर उसकी उपासना अपनी इच्छा अनुसार करने का प्रयत्न किया था । और बाइबल हमें बताती है,कि परमेश्वर ने आकाश से आग गिराकर उन दोनों को वहीं भस्म कर दिया था । (लैव्यव्यवस्था १०:१,२) ।

और फिर हम प्रभु यीशु मसीह के विषय में देखते हैं, कि उसके बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने कहा था, कि "मैं तो पानी से तुम्हें मनफिराव का बपतिस्मा देता हूं परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है: मै उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं , वह तुम्हें पवित्रात्मा और आग से बपतिस्मा देगा । उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ़ करेगा, और अपने गेंहू को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो कभी बुझने की नहीं । (मत्ती ३:११–१२) यीशु मसीह,यूहन्ना ने कहा था, पवित्रात्मा

और आग से बपतिस्मा देगा । बपतिस्मा का अर्थ है, किसी चीज़ के भीतर हो जाना । प्रभु यीशु ने अपने चेलों के ऊपर पवित्रात्मा को भेजकर उन्हें पवित्रात्मा का बपतिस्मा दिया था । और न्याय के दिन जब वह जगत का न्याय करने को प्रकट होगा उस दिन सारे अधर्मी लोग उस से हमेशा के लिए दूर होकर नरक की उस आग में प्रवेश करेंगे जो कभी नहीं बुझेगी ।

बाइबल कहती है, कि नरक आग की एक झील के समान है । यीशु ने कहा था कि न्याय के दिन वह अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा , और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे और उन्हें आग के कुन्ड में डालेंगे, वहां रोना और दांत पीसना होगा (मत्ती १३:४२) । इसलिये प्रभु ने यह सिखाया था, कि "यदि तेरा हाथ,या तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो काटकर फेक दें; क्योंकि टुन्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ–पाँव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए । और यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकालकर फेंक दे । काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए ।" (मत्ती १८:८,९) ।

आपने बड़ी बड़ी आगों के बारे में सुना होगा । अभी कुछ ही दिन पहले दिल्ली में एक मल्टी स्टोरी बिल्डिन्ग में आग लगी थी,जिसमें कुछ लोग मर गऐ थे और सैकड़ों जख्मी हो गए थे और करोड़ों रुपये की सम्पत्ति जलकर नष्ट हो गई थी । इसी शहर में अभी कुछ ही समय पूर्व एक बड़े होटल में आग लगी थी, और उसमें एक बड़ी संख्या में लोग जलकर ख़ाक हो गए थे और करोड़ों रुपये की सम्पत्ति आग से नष्ट हो गई थी । हमारे देश के बड़े बड़े शहरों मे आग की ऐसी दुर्घटनाएं अक्सर होती ही रहती हैं । पर शायद आप को याद होगा कि कुछ साल पहले ईरान के एक सिनेमा हाल में एक भयानक आग लगी थी जिसमें चार सौ से भी अधिक लोगों की जानें गई थीं ।

आग लग जाना वास्तव में एक बड़ी ही भयानक बात होती है । यूं तो हम आग पर खाना भी बनाते हैं, पर हम आग से डरते हैं । और हमें डरना चाहिए । पर सबसे अधिक हमें नरक की आग से डरना चाहिए । क्योंकि पृथ्वी पर कोई आग ऐसी नहीं होती है जो कभी बुझती नहीं है । कुछ घण्टों में या कुछ दिनों में वह अवश्य ही बुझ जाती है । पर नरक की आग ऐसी आग है जो कभी नहीं बुझेगी । इसीलिये बाइबल हमें यह सिखाती है कि हम सब अपना–अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस लौट आएं । क्योंकि जब पृथ्वी पर हमारा यह जीवन खत्म हो जाएगा तो हमेशा के अनन्तकाल में पहुंचकर हम सब उन दो स्थानों में से किसी एक स्थान में जाकर हमेशा के लिए रहेंगे जिन्हें परमेश्वर ने धर्मियों और अधर्मियों के लिये निश्चित किया है,और जिन्हें हम स्वर्ग और नरक के नाम से जानते हैं । इसीलिए प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि पृथ्वी पर यदि कोई भी ऐसी वस्तु है जो हमें पाप के मार्ग पर ले जाती है तो हम उसे अपने पास से दूर कर दें । क्योंकि, "काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है" यीशु ने कहा था, कि "दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए ।" परमेश्वर नहीं चाहता कि हम में से किसी के साथ भी ऐसा हो । इसीलिये बाइबल में लिखा है कि, परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र बलिदान कर दिया ताकि जो कोई उस में विश्वास लाए वह नरक की आग में नाश न हो परन्तु स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी पाए । (यूहन्ना ३:१६) । क्या आप अपना मन फिराकर आज उसके पास आएगें? नरक की आग से बचने का मनुष्य के पास और कोई उपाय नहीं है । केवल परमेश्वर का पुत्र यीशु ही मनुष्य को नरक में जाने से बचा सकता है । क्योंकि वही जगत के पापों का प्रयाश्चित है । उसमें होकर हम पापी से पवित्र और अधर्मी से धर्मी बन जाते हैं । सो इस से पहले कि कोई इन्सान इस जगत को छोड़कर अनन्तकाल में प्रवेश करने

को जाए उसे यह निश्चय कर लेना चाहिए कि वह यीशु के भीतर है क्योंकि उसके भीतर हम सुरक्षित हैं,लेकिन उसके बाहर हम ख़तरे में हैं । मेरी आशा है, कि आप इस बात पर सारी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे ।

परमेश्वर आज कैसे बोलता है ?

इस समय हम इस बात पर विचार करना चाहते हैं, कि आज इस वर्तमान समय में परमेश्वर मनुष्य से किस प्रकार बोलता है । इस विषय पर विचार करना आज इसलिये ज़रुरी हो गया है, क्योंकि आजकल कुछ लोग यह दावा कर रहे हैं कि परमेश्वर उन से बोलता है । पर क्या यह सच है ?

जब से परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है, तभी से उसने मनुष्य के साथ अपना सम्पर्क बनाए रखा है । क्योंकि वह जानता है, कि मनुष्य को उसकी अगुवाई की आवश्यकता है –सो उस ने इन्सान को कभी भी बिना आदेश और आज्ञाओं के नहीं छोड़ा है । यह और बात है कि मनुष्य ने अक्सर परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ा है ,पर परमेश्वर ने मनुष्य को कभी भी अपने वचन के बिना नहीं छोड़ा है । आरम्भ में, हम देखते हैं कि आदम से परमेश्वर खुद–ब–खुद बातें किया करता था । ऐसे ही वह नूह से भी बोलता था , और इब्राहिम से बोलता था । परमेश्वर को कभी भी किसी इंसान ने देखा नहीं है, पर उन लोगों ने उसकी आवाज़ को ज़रुर सुना था । मूसा के द्वारा भी परमेश्वर लोगों से बातें किया करता था । और ऐसे ही पूर्व समय में वह अपने भविष्य–वक्ताओं पर भी अपनी इच्छा को लोगों के लिए प्रकट किया करता था । किन्तु, बाद में जब यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, पृथ्वी पर आया था, तो परमेश्वर उसके द्वारा लोगों से बोलता था । इसी कारण हम बाइबल में पढ़ते हैं कि यीशु लोगों से कहता था, कि जो कुछ मैं बोलता हूं वह अपनी इच्छा से नहीं बोलता पर परमेश्वर मुझ में रहकर बोलता है ।

फिर हम बाइबल से देखते हैं कि जब यीशु क्रूस पर मनुष्य के उद्धार के काम को पूरा करके स्वर्ग पर वापस जानेवाला था तो उसने अपने प्रेरितों से कहा था कि , मैं जाकर तुम्हारे पास एक सहायक अर्थात पवित्रात्मा को भेजूगा, और जब वह तुम्हारे

पास आएगा तो वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और तुम्हें मेरी सारी बातें याद दिलाएगा और आनेवाली सब बातें भी तुम्हें बताएगा । सो जब उन प्रेरितों को पवित्रात्मा मिला था तो उन्होंने उसकी प्रेरणा से लोगों को शिक्षा दी थी और उसी की प्रेरणा से उन्होंने परमेश्वर के वचन की सब बातों को बाइबल की पुस्तकों में लिख दिया था । इसीलिए आज बाइबल को हम परमेश्वर के वचन की किताब कहते हैं, क्योंकि इस पुस्तक में परमेश्वर का वचन लिखा हुआ है । बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि, "पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप–दादों से थोड़ा–थोड़ा करके और भांति–भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं ।" (इब्रानियों १:१,२) । सो आज परमेश्वर लोगों से अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा बातें करता है । पर यीशु मसीह आज लोगों से किस प्रकार बातें करता है ? वह आज हमसे अपने नए नियम की पुस्तकों के द्वारा बातें करता है । उसमें लिखी बातों के द्वारा । यहां मैं आप को यह दिखाने की कोशिश कर रहा हूं, कि अब इस वर्तमान समय में, परमेश्वर किसी भी इंसान से खुद –ब– खुद बातें नहीं करता है । क्योंकि आज उसने अपनी सारी बातों को,अपनी सारी इच्छा को, और अपनी सारी आज्ञाओं को हमें अपने वचन की किताब बाइबल में हमेशा के लिए दे दिया है । और बाइबल के अन्त में उसने लिखवाकर हमें यह चेतावनी दी है, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाएगा तो वह परमेश्वर के निकट दोषी ठहरेगा और यदि इस पुस्तक की बातों में से कोई कुछ निकालेगा तो परमेश्वर उस से पलटा लेगा (प्रकाशितवाक्य २२:१८,१९) । ऐसे ही प्रेरित पौलुस ने भी एक जगह बाइबल में लिखकर यूं कहा था, कि यदि कोई स्वर्गदूत भी आकर ऐसी बात करे जो परमेश्वर के वचन की पुस्तक में नहीं लिखी हुई है , तो उस पर कभी विश्वास न करना । (गलतियों १:६–९) ।

परन्तु, मनुष्य परमेश्वर की चेतावनियों को बड़ी ही जल्दी

भूल जाता है । जैसे कि हम आदम के बारे में देखते हैं,कि जिस काम को करने के लिये परमेश्वर ने उसे मना किया था वही काम उस ने किया था । और इसी बात को हम बार–बार मनुष्य के बारे में देखते हैं । आज दुनिया में न सिर्फ ऐसे ही लोग हैं जो परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी हुई बातों के अलावा अन्य बातों को भी परमेश्वर का वचन मान लेते हैं । पर आज ऐसे लागों की भी कोई कमी नहीं है जो यश और धन कमाने के लिये लोगों को यह कहकर धोखा देते हैं कि उन्हें परमेश्वर या परमेश्वर का दूत दिखाई दिया था और उसने उन्हें कुछ करने की आज्ञा दी है । और आश्चर्य की बात तो यह है, कि परमेश्वर की पुस्तक होते हुए भी लोग ऐसे प्रचारकों की बातों में आ जाते हैं । बाइबल में एक जगह हम कुछ लोगों के बारे में पढ़ते हैं कि वे लोग बीरिया नाम के एक नगर में रहते थे । और उनके बारे में बाइबल कहती है ,कि जब पौलुस उनके पास परमेश्वर का वचन प्रचार करने गया था तो उन्होंने परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी बातों से पौलुस की बातों को मिलाकर देखा था । (प्रेरितों १७:१०,११) ।

परन्तु आज लोग ऐसा नहीं करते । आज तो लोग परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी बातों से भी अधिक उन बातों पर विश्वास करते हैं जो उन्हें वे लोग बताते हैं जो अपने आप को परमेश्वर के वचन के प्रचारक या भविष्यवक्ता कहते हैं । अमरिका में ओरल रॉबर्ट नाम के एक बड़े ही प्रसिद्ध प्रचारक हैं । करीब दो साल पहले उन्होनें लोगों से कहा था कि एक जंगल में परमेश्वर ने उनसे बातें करके उनसे कहा है कि वे अमरीका में तुलसा नाम की जगह में पन्द्रह करोड़ रुपये की लागत से एक हस्पताल बनवाएं और लोगों से कहें कि वे इसके लिए उदारता से दान दें । बस क्या था, कुछ ही दिनों में लाखों रुपए एकत्रित हो गए । अब यहां गौरतलब बात यह भी है, कि लोग इस बात को भूल गए कि यही प्रचारक महाश्य यह दावा भी करते हैं कि वे हर

तरह के बीमारों को यीशु के नाम से चंगाई दे सकते हैं! अब यदि यह सच था, तो वास्तव में ऐसे परमेश्वर के भक्त को तो हस्पताल बनवाने की आवश्यकता ही नहीं थी । पर लोगों ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और वे अपने दान भेजते रहे । जब लगभग दस करोड़ रुपये आने के बाद दान आना बन्द हो गए तो रॉबर्ट साहब ने फिर से लोगों को एक नई बात बताई । उन्होंने कहा कि नौ सौ फुट के लम्बे अकार में प्रभु ने मुझे दर्शन देकर कहा है, कि यदि बाकी का आवश्यक धन मार्च के महीने तक इकट्ठा नहीं किया जाएगा तो प्रभु मुझे अपने पास वापस बुला लेगा ! जानते हैं आप कि क्या हुआ ? लोगों ने रॉबर्ट को प्रभु के पास नहीं जाने दिया ! उन के अनुयायियों ने मार्च के महीने तक सारा पैसा इकट्ठा कर दिया !

यह मैनें आपको एक उदाहरण दिया है । परन्तु इस प्रकार की बातें केवल अमरीका में ही नहीं हो रही हैं । दुनियां में सब जगह ऐसे लोग हैं, और हमारे देश में भी हैं जो भोले–भाले लोगों को परमेश्वर और उसके धर्म के नाम से लूट रहे हैं । उन्हें अकसर परमेश्वर दिखाई देता रहता है, और उन्हें नई–नई बातें बताता रहता है । पर यदि वास्तव में ऐसा सच होता तो फिर वह हमें अपने वचन को बाइबल में लिखवाकर क्यों देता ? और क्यों वह बाइबल में ऐसा कहता, कि इस पुस्तक में लिखी हुई बातों में यदि कोई भी कुछ बढ़ाएगा , और इस पुस्तक में लिखी हुई बातों में से अगर कोई भी कुछ निकालेगा, तो मैं उसे दन्ड दूंगा ?

मेरे अज़ीजो और मेरे मित्रों, मैं आज आप का ध्यान इस बड़ी ही अहम बात पर दिला रहा हूं, कि आज परमेश्वर किसी भी मनुष्य के द्वारा अपनी इच्छा को लोगों पर प्रकट नहीं कर रहा है । उसने अपनी सारी आज्ञाओं को और अपनी सम्पूर्ण इच्छा को हमेशा के लिए अपनी बाइबल में लिखवा दिया है । अगर आप परमेश्वर की मर्ज़ी को जानना चाहते हैं, तो आप बाइबल

को पढ़िये । बाइबल में परमेश्वर ने हम सबके लिये हर एक उस बात को लिखवा दिया है, जिसे जानने की और जिस पर चलने की आज हमें ज़रुरत है । और इस बात को भी याद रखें कि एक दिन परमेश्वर हम सब का न्याय उन्हीं बातों के द्वारा करेगा जो उसकी किताब में लिखी हुई हैं । सो खबरदार रहें, और किसी भी ऐसे मनुष्य की बात पर कभी विश्वास न करें जो यह कहता है, कि परमेश्वर ने उस पर प्रकट होकर उसे कोई नया संदेश दिया है । क्योंकि परमेश्वर आज किसी भी मनुष्य के द्वारा बातें नहीं करता है, क्योंकि इसकी कोई ज़रुरत नहीं है, क्योंकि उसने अपनी सारी इच्छा को, अपने सारे वचन को, और अपनी सारी आज्ञाओं को हमारे लिए बाइबल में लिखवा दिया है । वास्तव में बाइबल के नए नियम में तो यूं लिखा है, कि "जो कोई आगे बढ़ जाता है ,और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है उसके पास पिता भी है और पुत्र भी । यदि कोई तुम्हारे पास आए और यही शिक्षा न दे , उसे न तो घर में आने दो और न नमस्कार करो ।" (२ यूहन्ना ६–१०) ।

यदि कोई व्यक्ति सिर्फ़ वही कहता है जो बाइबल में लिखा है, तो वह परमेश्वर के वचन का प्रचार करता है । यदि कोई उसमें लिखी बातों के अलावा कुछ बोलता है ,तो वह बहुत ज़्यादा बोलता है । और यदि वह बाइबल में लिखी सारी बातों का प्रचार नहीं करता है तो वह बहुत कम बोलता है । १ पतरस ४:११ में लिखा है, कि "यदि कोई बोले तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है ।" याद रखें! आज परमेश्वर केवल अपनी बाइबल में लिखी हुई बातों के द्वारा ही मनुष्यों से बोलता है ।

यदि सब ने सुसमाचार को मान लिया होता

मेरा यह पूरा विश्वास है कि समस्याओं और आतंक से परिपूर्ण इस संसार में आज यदि मनुष्य को किसी भी वस्तु की सबसे अधिक आवश्यकता है तो वह चीज़ है मसीह का सुसमाचार । आज जबकि धर्म और जाति के नाम पर जगह–जगह दंगे फ़साद हो रहे हैं, और जबकि आतंक और भय पृथ्वी पर सब लोगों पर छाया हुआ है । केवल मसीह का सुसमाचार ही लोगों को शांति दे सकता है । जिस समय यीशु मसीह ने अपने सुसमाचार को दुनिया में प्रचार करने को अपने चेलों को भेजा था , उस समय पृथ्वी पर एक सौ करोड़ से भी कम लोग थे । लेकिन आज हमारी इस ज़मीन पर लोगों की संख्या पांच–सौ–करोड़ से भी अधिक हो गई है । सो आज एक बड़ी भारी चुनौति है हमारे सामने । यह बड़ा ही ज़रुरी है, कि हर एक इन्सान कम–से–कम एक बार मसीह के सुसमाचार को अवश्य सुन ले । यह हर एक इन्सान का हक है – क्योंकि मसीह का सुसमाचार ज़मीन पर सब लोगों के लिये है ।

कभी–कभी मेरे मन में ऐसा विचार आता है ,कि आज हमारा यह संसार कितना फ़र्क होता, अगर आज सभी लोग मसीह की आज्ञाओं को मानकर उसकी शिक्षानुसार चल रहे होते । या फिर अगर, संसार में आधे लोग भी आज मसीह की शिक्षाओं को मानकर उसके आदर्श पर चल रहे होते, तो आज हमारा यह संसार कितना भिन्न होता । यदि वास्तव में ऐसा होता ,तो सुबह उठकर हम अपने समाचार पत्रों में ऐसा नहीं पढ़ते कि कुछ लोगों ने किसी गांव या नगर में जाकर वहां के लोगों को गोलियों से मार डाला है । अगर सचमुच में ऐसा होता,तो हम अपने रेडियो पर यह समाचार नहीं सुनते, कि कुछ लोगों ने बसों में सफ़र कर रहे कुछ यात्रियों को लूट लिया है, या मार डाला है । और अगर हकीकत में ऐसा होता, कि यदि संसार के सभी लोग या

कम–से–कम आधे लोग भी मसीह के आदर्शों पर चल रहे होते,तो न तो हम अपने समाचार पत्रों में ही यह पढ़ते और न शाम को अपने टी०वी० पर ही इस बात को सुनते या देखते कि कई स्थानों पर बम विस्फोटों से बहुतेरे मासूम लोगों की जानें चली गई हैं और लाखों रुपये की सम्पत्ति का नुकसान हो गया है ।

लेकिन अगर सच्चाई में ऐसा होता कि दुनिया के सभी लोग या कम–से–कम आधे लोग भी यीशु मसीह के सुसमाचार को मानकर आज उसके आदर्शों पर चल रहे होते तो इन सभी बातों की जगह, जिनके बारे में हमने अभी देखा है, हम यह पढ़ते और यह सुनते कि कुछ लोगों ने कुछ अनाथों को अपना लिया है , या कुछ लोगों ने गरीबों और आवश्यकता से पीड़ित कुछ लोगों की सहायता की है । तब हम आतंक की जगह शांति के बारे में पढ़ते, और बैर की जगह प्रेम के बारे में पढ़ते । तब हम ईर्ष्या और विरोध और भेद–भाव की जगह धीरज और भलाई और मेल के बारे में सुनते । किन्तु वास्तव में आज ऐसा नहीं है । आज हमारे इस जगत पर भय और आतंक का राज है । लोग भयभीत हैं,हमारे अधिकारी भयभीत हैं,और हमारी सरकारें भयभीत हैं । कोई स्थान आज सुरक्षित नहीं है । चाहे आप अपने घर में बैठे हों या बाहर सफ़र कर रहे हों,सुरक्षा कहीं भी नहीं है । कुछ भी निश्चित नहीं है, कभी भी कुछ भी हो सकता है । क्या यह सच नहीं है ?

पर हम सब एक बात जानते हैं कि हम सब के लिये यह बात परमेश्वर ने निश्चित की है कि हम सब एक बार मरेंगे और फिर उसके बाद हम सब उसे अपने–अपने जीवनों का लेखा देंगे । और बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर के न्याय के अनुसार सारे अधर्मी अनन्त विनाश का दन्ड पाने के लिये नरक में प्रवेश करेंगे, पर धर्मी अनन्त जीवन पाने के लिये परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करेंगे । (इब्रानियों ९:२७;२ कुरिन्थियों ५:१०; मत्ती २५:४६) । और प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचर हम सब के लिए इस बात

को निश्चित कर देता है,कि उसके द्वारा हम अवश्य ही परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे । क्योंकि उसका सुसमाचार यह है, कि उसने हमारे अपराधों और हमारे अधर्म के कामों को अपने ऊपर उठा लिया है । यीशु का सुसमाचार यह है कि उसने क्रूस पर अपनी मौत के द्वारा दुनिया के सारे लोगों के पापों का प्रायश्चित कर दिया है और इस कारण कोई भी इन्सान उस में होकर,अपने अधर्म के कामों के दन्ड से बच सकता है । जिस प्रकार हमें पानी की आवश्यकता है, जिस प्रकार हमें भोजन की आवश्यकता है, और जिस प्रकार हमें सांस लेने की आवश्यकता है, वैसे ही हमें यीशु मसीह के सुसमाचार की आवश्यकता है । क्योंकि एक जबकि हमें शारीरिक जीवन देता है, तो दूसरा हमें आत्मिक जीवन देता है । किन्तु शारीरिक जीवन नाशमान है,पर आत्मिक जीवन अविनाश और अनन्त है ।

क्या आप ने प्रभु यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास कर लिया है ? क्या आपने अपने पापों से मन फिरा लिया है? और क्या आपने अपने सब पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये पानी में दफ़न होकर यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा ले लिया है? अगर आपने ऐसा नहीं किया है, तो आप को ऐसा करने की ज़रुरत है । क्योंकि ऐसा करके,बाइबल कहती है,आप मसीह को अपने ऊपर धारण कर लेंगे । और आप उसके भीतर हो जाएंगे । मसीह के भीतर होकर न केवल हमें यही आश्वासन मिलता है कि उस में धर्मी ठहरकर हम स्वर्ग में हमेशा की ज़िंदगी पाएंगे,पर उसके भीतर होकर इस ज़मीन पर भी हम एक नए इन्सान बन जाते हैं । उसकी शिक्षाओं पर चलकर और उसके आदर्श को मानकर इस पृथ्वी पर हमारे जीवन बदल जाते हैं । वह हमें सिखाता है, कि हम अपने दुश्मनों से भी प्रेम करें,और उनके लिये प्रार्थना करें कि प्रभु उनको सुबुद्धि दे, कि वे मन फिराकर उसके सही मार्ग पर आ जाएं । प्रभु यीशु मसीह में होकर उस से हम यह सीखते हैं, कि जैसा हम चाहते हैं कि लोग हमारे साथ करें

हम भी उन के साथ वैसा ही करें । यीशु ने बुराई और अधर्म के काम करनेवालों को श्राप नहीं दिया था, पर उसने उन्हें बचाने के लिए अपनी जान दे दी थी । उस से हमें त्याग और बलिदान की शिक्षा मिलती है । वह हमें क्षमा और दया के मार्ग पर ले चलता है । उसमें होकर हम एक नए लोग बन जाते हैं । क्योंकि उसके भीरत आकर हमारा दृष्टिकोण और हमारा चाल–चलन ,हमारा व्यवहार और हमारा सम्पूर्ण जीवन बदल जाता है । वह हमें अंधकार में से निकालकर ज्योति में ले आता है, और हम से कहता कि "तुम जगत की ज्योति हो, जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता । और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचाता है । उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर, तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें ।" (मत्ती ५:१४–१६) ।

आज हम में से हर एक को चाहिए, कि हम अपने आप को जांचकर देखें कि इस पृथ्वी पर हमारे जीवन और हमारे काम कैसे हैं ? क्या हमारे जीवनों से और हमारे कामों से हमारे उस परमेश्वर पिता की बड़ाई हो रही है, जिसने हमें यह जीवन दिया है ? कितने बड़े अफ़सोस की बात है यह , कि जिस परमेश्वर ने हमें इस पृथ्वी पर जीवन दिया है, और जिसने हमें स्वर्ग में अनन्त जीवन देने के लिए अपने एकलौते पुत्र तक को हमारे अधर्म के कामों के कारण बलिदान कर दिया है ,हम में से अधिकतर लोग,उसी परमेश्वर पिता की इच्छा के विरोध में पृथ्वी पर अपना जीवन बिता रहे हैं । परन्तु परमश्वेर नहीं चाहता कि कोई भी उसकी इच्छा के विरोध में चलकर नाश हो, परन्तु वह यह चाहता है कि सब को मन फिराव का अवसर मिले, और सब अपना– अपना मन फिराकर उसके पास वापस आ जाएं । (२ पतरस ३:६) ।

शिष्यता का दाम

इस मौके को मै अपने लिये एक बड़ा ही अच्छा और महत्वपूर्ण अवसर मानता हूं, क्योंकि इस समय मै आपको उस परमेश्वर का सुसमाचार सुनाने जा रहा हूं जो हम सबका सृष्टिकर्ता और ईश्वर है । हमारी भाषाएं अलग–अलग हो सकती हैं, हमारी सांसकृतियां अलग–अलग हो सकती हैं ,और हमारे समाज अलग–अलग हो सकते हैं । पर हम सब को जीवन देनेवाला एक ही परमेश्वर है । वह हम सबको एक ही समान प्यार करता है और वह हम सब को अपने स्वर्ग में हमेशा का जीवन देना चाहता है । इसीलिये उस ने हमें अपनी एक ही पुस्तक दी है और उस पुस्तक में उसने अपनी इच्छा को सारे जगत के लिये प्रकट किया है । और परमेश्वर की पुस्तक बाइबल कहती है कि पृथ्वी पर सब ने पाप किया है और इसलिये सभी अपने–अपने अधर्म के कामों के कारण परमेश्वर से दूर हैं । (रोमियों ३:२३) । परन्तु फिर हमारे परमेश्वर की पुस्तक हमें यह बताती है, कि उस ने हम सबसे ऐसा प्रेम रखा है कि उसने हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए अपने पुत्र यीशु मसीह को जगत में भेज दिया जिस ने हमारे सब अधर्म के कामों को अपने ऊपर उठा लिया और परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर हमारे पापों का दन्ड सहा (१ यूहन्ना २:२) । इस प्रकार प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक मध्यस्थ बन गया । बाइबल कहती है कि अब हम सब अपने पापों के प्रायश्चित यीशु मसीह के द्वारा अपने–अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके अपने परमेश्वर के साथ मेल कर सकते हैं । और यह तब होता है , जब हम अपने सारे मन से यीशु मसीह में यह विश्वास लाते हैं कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है, और अपने सब पापों से मन फिराते हैं, और अपने पापों की क्षमा पाने के लिये जल में बपतिस्मा लेते हैं । (प्रेरितों २:३८:८:३५–३६; मरकुस १६:१६) । जब हम परमेश्वर की आज्ञा मानकर ऐसा करते

हैं तो हम अपने सब पापों से छुटकारा प्राप्त करके यीशु मसीह के अनुयायी बन जाते हैं, और वह हमारा उद्धार करके हमें अपने पवित्र लोगों की मन्डली अर्थात अपनी कलीसिया में मिला लेता है । (प्रेरितों २:३७–४७) ।

प्रभु यीशु ने कहा था, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता । सो परमेश्वर के पास पहुंचने के लिये यीशु मसीह के पास आना ज़रुरी है । पर जितना ज़रुरी यीशु के पास आना है, उतना ही अधिक ज़रुरी यह भी है कि हम उसके पीछे चलें । यीशु के पास आना और उसके पीछे चलना यह दो अलग – अलग बातें हैं । जब हम उसमें विश्वास लाते हैं, और अपना मन फिराते हैं, और बपतिस्मा लेते हैं, तो इस प्रकार हम उसके पास आते हैं । यह हमारे मसीही जीवन का और शिष्यता का आरम्भ होता है । किन्तु कोई भी काम जब आरम्भ किया जाता है तो वह बड़ा ही आसान लगता है, लेकिन किसी काम को जितना ज़रुरी शुरु करना होता है, उतना ही ज़रुरी उसे अन्जाम देना भी होता है । जब तक हम कोई काम पूरा नहीं कर लेते तब तक उसका परिणाम हम नहीं निकाल सकते । एक दौड़ को शुरु करना जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक उसे खत्म करना भी है । ईनाम दौड़ का उसे नहीं मिलता है जो दौड़ शुरु करता है ,पर ईनाम उसे मिलता है जो दौड़ को पूरा करता है । बहुतेरे लोग विश्वास करके और बपतिस्मा लेकर सोचते हैं कि उन्होंने स्वर्ग में प्रवेश कर लिया है, पर यह धारणा गलत है । यीशु ने कहा था,कि जो व्यक्ति अपनी मृत्यु तक मेरे प्रति विश्वासी बना रहेगा मै उसे जीवन का मुकुट दूंगा । (प्रकाशितवाक्य २:१०) ।

"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे" यीशु ने कहा था, "तो अपने आपे से इंकार करे, और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले ।" (लूका ९:२३) ।

यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, यीशु ने कहा था । यह एक

व्यक्तिगत चुनाव और एक व्यक्तिगत निश्चय है । कोई किसी को ज़बरदस्ती मसीह के पास नहीं ला सकता । हर एक इन्सान को स्वयं अपने लिये यह फ़ैसला करना है कि वह मसीह के पास आना चाहता है या नहीं और जो इन्सान मसीह के पास आना चाहता है उसके लिये यह ज़रुरी है, कि वह अपने आपे से इंकार करे । अर्थात इस बात का निश्चय करे की मैं अब अपना जीवन अपनी मर्ज़ी से नहीं पर मसीह की मर्ज़ी से व्यतीत करुंगा । अब मेरी ज़िन्दगी में मेरी इच्छा नहीं परन्तु मसीह की इच्छा पूरी होगी । जो मसीह कहेगा मैं वह बोलूंगा, जो मसीह चाहेगा मैं वह करुंगा और जहां मसीह भेजेगा मै वहां जाउंगा । जब हम इस निश्चय के साथ मसीह के पास आते हैं तो हम अपने मुंह से कोई गन्दी बात नहीं बोलेंगे, क्योंकि मसीह ऐसा नहीं चाहता । जब हम ऐसा निश्चय करके मसीह के पास आएंगे तो हम ऐसा कोई गलत काम नहीं करेंगे जो परमश्वर की मर्ज़ी के खिलाफ़ होगा । और जब हम अपने आपे का इंकार करके मसीह के पास आएंगे तो हम किसी ऐसी जगह पर नहीं जाएंगे जहां मसीह स्वयं नहीं जाएगा । बपतिस्मा लेने का वास्तविक अर्थ यही है । क्योंकि बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य एक मरे हुए इंसान की तरह पानी की कब्र में गाड़ा जाता है, और उस में से बाहर निकलकर एक नए जीवन को व्यतीत करने का निश्चय करता है । (रोमियों ६:३–६) ।

सो हम याद करते हैं कि यीशु ने कहा था,कि "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपे से इंकार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले ।" क्रूस, दुखों और यातनाओं का एक निशान है । क्रूस बलिदान और आज्ञापालन का एक चिन्ह है । क्रूस के ऊपर चढ़कर मसीह ने दुख उठाए थे, यातनाएं सही थीं, और परमेश्वर की आज्ञा मानकर अपने आपको बलिदान किया था । सो जब कि यीशु ने कहा है, कि यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपे से इंकार करे और अपना क्रूस उठाए हुए मेरे

पीछे हो ले । तो क्रूस उठाकर उसके पीछे चलने का अर्थ यही है,कि यदि आवश्यक हो तो हम उसके पीछे चलकर दुख उठाएं,और यातनाएं सहें, और त्याग तथा बलिदान करें, जैसे कि स्वयं उसने किया था । बाइबल में लिखा है, "और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठा–उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है,कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो । न तो उसने पाप किया,और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली । वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी को सौंपता था । और वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं ।" (१ पतरस २:२१–२४) ।

सो हम अपने इस पाठ से यह बात सीखते हैं,कि जबकि परमेश्वर ने हम सबसे ऐसा महान प्रेम किया है कि पाप से हमारा उद्धार करके हमें स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी देने के लिए उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिये बलिदान कर दिया है । परन्तु स्वर्ग में वह अनन्त–जीवन हमें केवल तभी मिलेगा यदि हम उसके मार्ग पर अन्त तक दृढ़ता से चलते रहेंगे । परमेश्वर का मार्ग कठिन ज़रुर है,पर उसके अन्त में जो प्रतिफल हमें परमेश्वर से मिलेगा उसके सामने वह कुछ भी नहीं है । हम स्वयं यीशु के बारे में देखते हैं, कि उसने दुख सहे थे उसने त्याग और बलिदान किया था ,लेकिन वह सब कुछ ही समय का था, पर अब वह हमेशा के लिए स्वर्ग में परमेश्वर के साथ है । ऐसे ही हमारे सामने भी,परमेश्वर के मार्ग पर चलते हुए,दुख और तकलीफ़ें आ सकती हैं, पर वह थोड़े ही समय की होती हैं – पर अगर हम अन्त तक अपना क्रूस उठाकर परमेश्वर के मार्ग पर चलते रहेंगे तो हम जानते हैं कि उसने प्रतिज्ञा करके कहा है, कि अंत में वह हमें स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी और अनन्त जीवन का मुकुट देगा ।

"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपे से इन्कार करे

और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले ।" क्या आप उद्धारकर्ता यीशु के पास आना चाहते हैं ? क्या आप उसकी चुनौती को स्वीकार करने को तैयार हैं ? यीशु ने कहा था, "हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ मै तुम्हें विश्राम दूंगा ।" (मत्ती ११:२८) ।

प्रायश्चित

जब हम बाइबल में से प्रभु यीशु मसीह के बारे में पढ़ते हैं, तो हमारा ध्यान इस बात पर जाता है कि बाइबल में यीशु को कई तरह के नामों से पुकारा गया है । उसे "परमेश्वर का मेम्ना" कहा गया है । "जीवन का मार्ग" और "द्वार" कहा गया है । बाइबल उसे "जीवन की रोटी" और "जगत की ज्योति" कहकर सम्बोधित करती है । और इसी तरह से अनेक अन्य अर्थपूर्ण नामों से भी यीशु को बाइबल में सम्बोधित किया गया है । पर आज हम अपने पाठ में यह देखेंगे कि बाइबल कहती है, कि यीशु जगत के पापों का प्रायश्चित है ।

प्रेरित यूहन्ना एक जगह बाइबल में मसीह के अनुयायीयों से इस प्रकार कहता है,कि, "मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं कि तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है: और केवल हमारे ही नहीं,वरन सारे जगत के पापों का भी ।" (१ यूहन्ना २:१,२) । और फिर एक और जगह वह कहता है, कि "प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा ।" (१ यूहन्ना ४:१०) ।

प्रायश्चित का अर्थ है, दुख उठाकर दाम भरना,या बलिदान देना,या किसी के दोष को अपने ऊपर लेकर उसका दन्ड उठाना । प्रायश्चित का अर्थ यह कदापि नहीं है कि अगर कोई चोरी या अपराध करके सज़ा पाता है तो वह अपने अपराध का प्रयश्चित कर रहा है । कभी– कभी लोग प्रयश्चित करने का गलत अर्थ लगा लेते हैं । प्रायश्चित करने का अभिप्राय केवल दन्ड उठाने या सज़ा पाने से ही नहीं है । क्योंकि अगर कोई अपराध करता है या कोई गलत काम करता है, और फिर उसकी सज़ा पाता है तो यह प्रायश्चित नहीं है ,पर यह उसके अपराध का दन्ड है

जो उसे मिलता है । परन्तु प्रायश्चित का सही अर्थ यह है , कि कोई इन्सान किसी के अपराध को अपने सिर ले–ले और फिर उसे बचाने के लिये उसके अपराध की सज़ा खुद पाए । न्याय की मांग को इस प्रकार से पूरा करना वास्तविक प्रायश्चित है । यहां मुझे एक कहानी याद आती है, जो कि एक सच्ची घटना पर आधारित है, और प्रायश्चित करने के अर्थ को ठीक से समझने में हमारी सहायता करती है ।

एक बार एक नौजवान लड़के को अदालत में एक जज के सामने लाया गया । उस लड़के पर यह दोष लगाया गया था कि वह शराब पीकर गाड़ी चला रहा था और चौराहे पर लाल बत्ती को देखकर भी उसने गाड़ी नही रोकी थी । अदालत ने अच्छी तरह से उस केस की जांच करने के बाद उस लड़के को दोषी पाया, और जज ने उस लड़के को पाँच सौ रुपये जुर्माना भरने की सजा सुनाई । इसके बाद जज ने अपनी जेब से बटुवा निकाला और उसमें से पाँच सौ रुपये निकालकर उस लड़के का जुर्माना भर दिया । अदालत में बैठे सभी लोग यह बात देखकर बड़े ही चकित हुए, और इससे पहले की कोई कुछ बोलता , जज ने उस लड़के की तरफ देखकर कहा, कि मैं जानता हूं कि यह जुर्माना यह लड़का नहीं भर सकता, क्योंकि इसके पास इतने पैसे नहीं हैं और यह बात मैं इसलिये जानता हूं, क्योंकि यह लड़का खुद मेरा ही लड़का है ।

जब हम बाइबल में इस बात को पढ़ते हैं कि यीशु मसीह हमारे पापों का प्रयश्चित है तो इसका ठीक यही अर्थ है, जैसा कि अभी हमने इस कहानी से देखा है । परमेश्वर ने हमें बचाने के लिये हम पर दया की । उसने यीशु मसीह में होकर हमारे दन्ड कों अपने ऊपर उठा लिया । क्योंकि वह जानता है, कि हम स्वयं अपने पापों का कर्ज़ा नहीं चुका सकते । उसका न्याय कहता है कि, "पाप की मजदूरी मृत्यु है ।" (रोमियों ६:२३) और उसकी व्यवस्था कहती है कि "जो प्राणी पाप करेगा वही मरेगा ।"

(यहेजकेल १८:२०) । परन्तु उसका प्रेम हमें मरते नहीं देख सकता । उसका प्यार हमें नाश होते नहीं देख सकता । क्योंकि वह हमारा स्वर्गीय पिता है । सो वह हमारे पापों का दन्ड स्वयं अपने ऊपर उठाने को स्वर्ग को छोड़कर ज़मीन पर आ गया । उसने पृथ्वी पर रहकर इन्सानों का सा जीवन व्यतीत किया । उसने सब प्रकार की मुसीबतें उठाइं । और फिर परमेश्वर की ठहराई मनसा से उस पर झूठे दोष लगाए गए ताकि वह मृत्यु दन्ड पाए । वह पकड़ा गया,और झूठे आरोपों के बल पर वह दोषी भी ठहराया गया । फिर उसे मौत की सज़ा सुनाई गई । और इस तरह वह एक क्रूस पर लटकाकर मारा गया । बाइबल कहती है, कि उसमें कोई भी पाप नहीं था,पर "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं ।" (१ पतरस २:२२–२४) । यीशु ने अपने जीवन में कभी कोई पाप नहीं किया था किन्तु फिर भी उसने पापी मनुष्य की तरह क्रूस पर चढ़कर मृत्यु दन्ड पाया था । क्योंकि वह जगत के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था । वह जानता था कि मनुष्य स्वयं अपने पापों का प्रायश्चित नहीं कर सकता – क्योंकि उसके पास ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे देकर वह अपने पापों का प्रायश्चित कर ले । इसलिये परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर हमारे दन्ड को खुद अपने ही उपर उठा लिया, यानि उसने हमारे पापों का प्रायश्चित कर दिया । उसने उसे, जिस में कोई पाप नहीं था, हमारे स्थान पर पापी मान लिया और हमारे पापों का दन्ड उसे दे दिया ताकि हम उसके द्वारा बच जाएं । वह हमारे पापों का प्रायश्चित और हमारा छुटकारा है ।

बाइबल में रोमियों की किताब के तीसरे अध्याय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रकट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यवक्ता देते हैं । अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास

करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है: क्योंकि कुछ भेद नहीं । इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं । परन्तु, उसके अनुग्रह से उस छुंटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है सेंत–मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं । क्योंकि, उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया है, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की, उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रकट करे । बरन इसी समय उसकी धार्मिकता प्रकट हो कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो ।" (रोमियों ३:२१–२६) ।

यह सुसमाचार है! यानि परमेश्वर ने आपके और मेरे पापों का प्रायश्चित कर दिया है । जो दन्ड वास्तव में आप को मिलना चाहिए था उस ने स्वयं अपने ही ऊपर उठा लिया है । क्योंकि वह आप से प्रेम करता है, और वह मुझ से प्रेम करता है । और वह नहीं चाहता कि कोई भी इन्सान अपने पापों के कारण नाश हो । क्या आप इसी समय अपना मन फिराकर उसके पास न आना चाहेंगे? प्रभु यीशु ने कहा था, कि जो मुझ पर विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा मैं उसका उद्धार करुँगा । (मरकुस १६:१६) । अगर आप यीशु मसीह में अपने सारे मन से यह विश्वास लाएंगे कि वह आपके पापों का प्रायश्चित है, और अपने हरएक पाप से मन फिराकर उसकी आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे–तो परमेश्वर उसके प्रायश्चित–रुपी बलिदान के फलस्वरुप आपके सब पापों को क्षमा कर देगा । क्या आप ऐसा करेंगे? परमेश्वर आपको क्षमा करना चाहता है । वह आपको एक नया जीवन देना चाहता है । वह आपको अपने पुत्र यीशु मसीह के भीतर, जो जगत के पापों का प्रायश्चित है, धर्मी बनाना चाहता है । वह चाहता है कि आप उसमें विश्वास लाएं और अपना जीवन उसे दें दें । इस से बड़ा और कोई दूसरा निश्चय आप

अपने जीवन में नहीं कर सकते । और मेरी आशा है, कि आप ऐसा ही करेंगे । क्योंकि यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो फिर इस जीवन के बाद आप के पास क्या आशा है? किस आशा के साथ आप इस संसार से जाएंगे? इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता, कि संसार में हरएक इन्सान को पाप से छुटकारा चाहिए, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य पापी है । और हम पाप के भीतर मरके स्वर्ग में नहीं जा सकते । हमें इसी जीवन में–इस जगत को छोड़ने से पहले–अपने पापों की क्षमा पाने की आवश्यकता है । और परमेश्वर ने हमारी क्षमा का प्रबन्ध कर दिया है । तौभी, यदि हम में से कोई स्वर्ग में जाने से रह जाएगा तो इसका ज़िम्मेदार स्वयं वही व्यक्ति होगा । यह सच है, कुछ सीमा तक, कि हमारा भविष्य स्वयं हमारे ही हाथ मे है ।

अनन्त वस्तुएं

इस वक्त मैं आप का ध्यान कुछ ऐसी चीज़ों पर दिलाना चाहता हूं जो अनन्त हैं । अनन्त से मेरा मतलब उन वस्तुओं से है जो हमेशा विद्यमान रहेंगी । जब हम अपने संसार को देखते हैं, जब हम पृथ्वी और आकाश को देखते हैं, तो हमें बहुत सी ऐसी चीज़ें उनमें नज़र आती हैं जिन्हें देखकर हमें ऐसा लगता है कि ये वस्तुएं हमेशा से हैं और सदा इसी प्रकार बनी रहेंगी । परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है । परमेश्वर की पुस्तक बाइबल हमें बताती है कि आकाश और पृथ्वी पर जो कुछ भी हम देखते हैं उन सब चीज़ों को परमेश्वर ने बनाया है । अब यह सुनकर शायद कोई यह कहे कि रेडियो, घड़ी,मोटर और हवाई जहाज़ को तो मनुष्य ने बनाया है । यह किसी हद तक ठीक है, पर जिन चीज़ों से रेडियो, घड़ी, मोटर और हवाई जहाज़ को बनाया गया है, उन सबको तो परमेश्वर ने ही बनाया था । और, फिर जो इन्सान इन सब चीज़ों को बनाता है, उसे भी तो परमेश्वर ने ही बनाया था । सो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ भी है उस सब को परमेश्वर ने ही बनाया है ।

परन्तु आकाश और पृथ्वी पर जो कुछ भी हम देखते हैं, बाइबल कहती है, कि एक दिन इन सब चीज़ों का अन्त हो जाएगा । बाइबल में लिखा है कि, "प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे ।" (२ पतरस ३:१०) । सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने एक दिन नियुक्त किया है जिस में आकाश और पृथ्वी की सारी वस्तुएं जलकर खतम हो जाएंगी । वह दिन जगत का अंतिम दिन होगा । वह दिन हरएक के न्याय का दिन होगा । उस दिन प्रत्येक उस वस्तु का अन्त

हो जाएगा जो शारीरिक और इस जगत की है, और तब केवल वही चीज़ें बचेंगी जो आत्मिक और अनन्त हैं । लेकिन वे वस्तुएं कौन सी हैं?

सबसे पहले, हमारा ध्यान स्वंय परमेश्वर की ओर जाता है । परमेश्वर अनन्त है । बाइबल में लिखा है,कि वह अनादि है । (व्यवस्थाविवरण ३३:२७) । बाइबल कहती है,कि आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की थी । (उत्पत्ति १:१) । और अंत में हम में से हर एक परमेश्वर को अपना– अपना लेखा देगा । (रोमियों १४:१२) । और धर्मी युगानुयुग परमेश्वर के साथ राज्य करेंगे । (प्रकाशितवाक्य २२:५) । यहां से हम न केवल यही देखते हैं, कि परमेश्वर अनन्त है, पर हम यह भी देखते हैं, कि धर्मी लोग भी उसके साथ हमेशा वर्तमान रहेंगे । वास्तव में, बाइबल से हम यह सीखते हैं कि मनुष्य चाहे धर्मी हो या अधर्मी उसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा, यानि हरएक इन्सान भी अनन्त है । क्योंकि इंसान परमेश्वर का स्वरुप है । यहां इस बात को ध्यान में रखें कि मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हरएक इंसान परमेश्वर है, पर इसके विपरीत मैं यह कह रहा हूं, कि मनुष्य परमेश्वर का स्वरुप है, और इसलिये परमेश्वर के ही समान वह भी हमेशा विद्यमान रहेगा । दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही समान एक आत्मिक प्राणी बनाया है । जब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, तो वह कहां चला जाता है? यहां मैं इंसान के जिस्म की बात नहीं कर रहा हूं, जिसे आरम्भ में परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से बनाया था, पर मैं उसकी आत्मा के बारे में कह रहा हूं जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को आरम्भ में दिया था । मनुष्य पृथ्वी पर कहां से आया है और वह कहां चला जाता है? इसका जवाब केवल हमे परमेश्वर ही दे सकता है । और वह हमें अपनी पुस्तक बाइबल में बताता है, कि आरम्भ में उसने मनुष्य की देह को भूमि की मिट्टी से बनाया था और फिर उसके भीतर उसने अपनी आत्मा को फूंका था । (उत्पत्ति २:७) । और जब मनुष्य

मृत्यु के द्वारा अपने शरीर को छोड़ देता है तो उसका शरीर तो मिट्टी में ही मिल जाता है पर उसकी आत्मा परमेश्वर द्वारा ठहराए एक अनन्त स्थान में चली जाती है । वह अनन्त स्थान क्या है?

प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब वह जगत का न्याय करने को आएगा तो पृथ्वी के सारे लोग उसके सामने खड़े होंगे, और प्रभु ने कहा था कि तब अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे और धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे । (मत्ती २५:४६) । यहां इस बात पर ध्यान दें कि प्रभु ने कहा था, कि अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे और धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे । यानि मनुष्य अधर्मी हो या धर्मी हो वह हमेशा विद्यमान रहेगा । और जिस प्रकार धर्मी स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी पाएंगे, वैसे ही सारे अधर्मी नरक में हमेशा का दन्ड पाएंगे । यानि स्वर्ग और नरक दोनों ही अनन्त स्थान हैं । बाइबल में स्वर्ग और नरक दोनों का अलग–अलग शब्दों में वर्णन किया गया है । जबकि स्वर्ग को हमेशा की ज़िन्दगी कहा गया है, तो नरक को हमेशा की मौत कहा गया है । जबकी स्वर्ग को उजियाला कहा गया है, तो नरक को अंधकार कहा गया है । और जबकि स्वर्ग के विषय में बाइबल कहती है, कि वहां परमेश्वर के लोग उसके साथ शांति पाएंगे, दूसरी और, नरक का वर्णन करके बाइबल कहती है कि वह आग की एक ऐसी झील है जो आग और गन्धक से हमेशा जलती रहती है ।

सो परमेश्वर अनन्त है, और उसके स्वरुप पर बना मनुष्य भी अनन्त है । इसी प्रकार स्वर्ग भी अनन्त है और नरक भी अनन्त है । और जब इस जगत का अन्त हो जाएगा तो उस समय अनन्तकाल का आरम्भ होगा जिसका कभी अन्त नहीं होगा । तब परमेश्वर के लोग उसके साथ सदा के उजियाले में रहेंगे, और अधर्मी नरक में सदा के अन्धकार में रहेंगे ।

कुछ बातें ऐसी होती हैं, मित्रों, जिनका सामना हम सब को एक ही समान करना पड़ता है, क्योंकि उन्हें परमेश्वर ने नियुक्त

किया है । हम सब एक समान जन्म लेते हैं हम सबको जीवन की विभिन्न अवस्थाओं से एक समान होकर गुज़रना पड़ता है, और फिर एक दिन सभी मनुष्य मरते भी हैं । इसी प्रकार परमेश्वर ने मृत्यु के बाद न्याय को भी नियुक्त किया है । (इब्रानियों ६:२७) । और जिस प्रकार हम सब जन्म लेते हैं और मरते हैं, उसी तरह से हम सब को उसके न्याय का सामना भी करना पड़ेगा इसमें हम कुछ भी नहीं कर सकते, इन बातों से हम किसी भी तरह से नहीं बच सकते, क्योंकि इन्हें परमेश्वर ने नियुक्त किया है ।

लेकिन एक काम हम ज़रुर कर सकते हैं, और वह यह है, कि हम इस जीवन में इस बात का चुनाव कर सकते हैं कि जब हम यहां से जाएंगे तो अनन्तकाल में हम कौन सी जगह प्रवेश करेंगे । बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी जन नाश हो बरन वह चाहता है कि सब को मन फिराव का अवसर मिले । (२ पतरस ३:९) । यानि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी इन्सान अपने अधर्म के कामों के कारण नरक के हमेशा के दन्ड में प्रवेश करे, पर वह सब को स्वर्ग में हमेशा का जीवन देना चाहता है । इसी कारण बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर ने सारे जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नरक में नाश न हो परन्तु स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाए ।

परमेश्वर का एकलौता पुत्र यीशु मसीह था, जिसे परमेश्वर ने जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर बलिदान कर दिया था । आज हम सबके पास यह एक सुंदर अवसर है कि हम यीशु मसीह के द्वारा , जो हम सबके पापों का प्रायश्चित है, अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के सम्मुख धर्मी बन जाएं, और उसकी प्रतिज्ञानुसार उसके स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाएं । परमेश्वर की बाइबल कहती है, कि जो कोई इन्सान यीशु मसीह में विश्वास लाएगा ओर अपने अधर्म के कामों से मन फिराएगा, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा

लेगा, प्रभु उसके सब पापों को क्षमा करेगा– और जो कोई उसके प्रति अपनी मृत्यु तक विश्वासी बना रहेगा उसे वह स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा । (प्रकाशितवाक्य २:१०) ।

सो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि हम में से हर एक का अनन्त भविष्य इसी बात पर निर्भर करता है कि हम अपने जीवनों में परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का क्या करते हैं । अगर हम उसे स्वीकार करेंगे तो हम अवष्य ही अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे, पर यदि हम उसे अस्विकार कर देंगे तो हम हमेशा उससे दूर रहेंगे । सो हमारे सामने एक अनन्त भविष्य है । हमारे सामने एक अनन्त प्रश्न है । क्या हम नरक की अनन्त मृत्यु से बचना चाहते हैं? क्या हम परमेश्वर के स्वर्ग में अनन्त जीवन पाना चाहते हैं? परमेश्वर हमें अनन्त जीवन देना चाहता है । उसने हमारे लिये स्वर्ग में प्रवेश करने का मार्ग तैयार कर दिया है । क्या हम उस पर चलकर प्रवेश करने को तैयार हैं? अभी निश्चय कीजिए । यह आप की अनन्त आत्मा का और अनन्त मृत्यु और अनन्त जीवन का प्रश्न है!

बपतिस्मा क्या है?

इस पाठ में मैं आप को यह बताना चाहूंगा, कि बपतिस्मा क्या है? प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि जो विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६:१६)। हम सब यह समझते हैं कि विश्वास लाने का अर्थ यह है, कि हमें मसीह में यह विश्वास लाना चाहिए कि वह हमारे पापों के लिये क्रूस पर मरा था, और उसने अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे पापों का प्रायश्चित किया था। परन्तु बपतिस्मा क्या है? यह भी समझना बड़ा ही ज़रुरी है। क्योंकि, उद्धार, यीशु ने कहा था, उसी का होगा जो विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा। अगर आप के पास बाइबल या नया नियम है, तो इस बात को आप स्वंय मरकुस १६:१६ में पढ़ सकते हैं। हम सब समझते हैं कि विश्वास लाने का अर्थ क्या है, लेकिन हम सब इस बात को नहीं जानते कि बपतिस्मा कया है। सो आज मैं आप को बाइबल में से इसी सम्बन्ध में बताने जा रहा हूं।

बाइबल में बपतिस्मे की अहमियत, अर्थात महत्व को कई प्रकार से दर्शाया गया है। रोमियों ६ अध्याय में बपतिस्मे की तुलना गाड़े जाने और फिर से एक नए जीवन के लिये जी उठने से की गई है। यहां हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि "हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को क्योंकर उसमें जीवन बिताएं? क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मुर्दों में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि

पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों ६:२–६)।

यहां से सबसे पहली बात हम यह सीखते हैं, कि जिस तरह से गाड़े जाने से पहिले, देह मरती है, जैसे कि मसीह भी अपने गाड़े जाने से पहले मरा था, वैसे ही बपतिस्मे के पानी के भीतर गाड़े जाने से पहले हमारे भीतर कुछ मरता है। बपतिस्मा लेने से पहिले हम सभी अन्य चीज़ों पर से अपना विश्वास हटाकर मसीह में विश्वास ले आते हैं, और हम अपने सब पापों से मन फिराते हैं। इस प्रकार हम यह मान लेते हैं कि अब हम अपने पुराने जीवन को छोड़ रहे हैं। हम यह निश्चय करते हैं कि अब से हम अपना जीवन अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं बिताएंगे, पर अब हम परमेश्वर के वचन को मानकर उसकी मर्ज़ी पर चलेंगे। इस प्रकार, हम पाप के लिये मर जाते हैं। इस का अर्थ यह नहीं है कि हमारे सामने से सारे लालच और सारी बुराईयां हट जाते हैं। पर इसका मतलब यह है, कि हमारे भीतर एक परिवर्तन आ जाता है। अब हम अपना जीवन मसीह में और मसीह के द्वारा व्यतीत करना चाहते हैं। हमें एक नया रास्ता मिल जाता है। हम पाप के लिये अपने आप को मरा हुआ समझ लेते हैं। हम यह मान लेते हैं कि अब हमारे ऊपर पाप की प्रभुता नहीं रहेगी। अब यीशु की प्रभुता हमारे ऊपर रहेगी। सो हम अपने लिये मर जाते हैं। अपनी खुदी के लिये हम मर जाते हैं।

दूसरी बात यहां से हम यह देखते हैं, कि जिस तरह से एक मरे हुए इन्सान के जिस्म को एक कब्र के भीतर गाड़ दिया जाता है। वैसे ही हम अपने पाप के लिये मरने के बाद, पानी के भीतर गाड़े जाते हैं। और इसी को बपतिस्मा कहते हैं। जैसे की मसीह हमारे पापों के लिये मारा गया था और गाड़ा गया था, वैसे ही हम भी पाप के लिये मरने के बाद गाड़े जाते हैं। अर्थात इस प्रकार हम मसीह की मृत्यु की समानता में उसके साथ एक हो जाते हैं। मसीह किस लिये मरा था? हमारे पापों के लिये। यानि

परमेश्वर ने उसकी मौत को हम सब के पापों का प्रायश्चित मान लिया था । सो जबकि हम उसकी आज्ञा मानकर पाप के लिये मर जाते हैं और बपतिस्मा लेकर उसके साथ गाड़े जाते हैं, तो इस प्रकार हम उसकी मौत और गाड़े जाने की समानता में उसके साथ एक हो जाते हैं । बाइबल कहती है, कि अगर हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ एक हो गए हैं तो निश्चय ही हम उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ एक हो जाएंगे । (रोमियों ६:५) । मसीह कब्र में से बाहर आकर जी उठा था । और ऐसे ही हम भी बपतिस्मे के पानी में दफ़न होने के बाद उस में से बाहर निकलकर मसीह के जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाते हैं । और तब हम एक नए जीवन की चाल चलते हैं । तब हम एक नया जीवन मसीह मे होकर बिताने का प्रयत्न करते हैं ।

सो यहां हम एक बड़ी ही खूबसूरत तस्वीर देखते हैं । यानि जब कोई इन्सान बाइबल की शिक्षानुसार बपतिस्मा लेता है, तो वह उस समय यीशु मसीह की मौत और उसके गाड़े जाने और उसके जी उठने को प्रदर्शित करता है और उन तीनों बातों में उसके साथ एक हो जाता है । नया जीवन मनुष्य को बपतिस्मा लेने के बाद ही मिलता है । इसीलिये यीशु ने एक जगह कहा था, कि जब तक कोई मनुष्य जल ओर आत्मा से न जन्मेगा वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा । (यूहन्ना ३:३,५) ।

फिर, गलतियों ३:२७ में प्रेरित पौलुस बपतिस्मे के महत्व को यह कहकर व्यक्त करता है कि, तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है । सो, एक बार फिर से हम देखते हैं कि बपतिस्मा लेना कितना ज़रुरी है । बाइबल का लेखक कहता है, कि तुम में से जितनों ने बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है । अर्थात, जितनों ने बाइबल की शिक्षानुसार बपतिस्मा नहीं लिया है, उन्होंने मसीह को नहीं पहना है और वे मसीह के भीतर नहीं हैं । अगर कोई

यह कहे कि जितनों ने टिकट ले लिया है, वे ही लोग गाड़ी में बैठ सकते हैं। तो इस का अर्थ यह हो जाता है कि जिन्होंने टिकट नहीं लिया है वे गाड़ी में नहीं बैठ सकते। और बाइबल कहती है कि बपतिस्मा लेकर हम मसीह को पहिन लेते हैं, यानि हम उसके भीतर हो जाते हैं। क्योंकि हम उसकी मौत, और उसके गाड़े जाने, और जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाते हैं।

बपतिस्मा लेकर मसीह को पहिन लेने का अर्थ यह है, कि हम एक नए इन्सान को पहिन लेते हैं। इसीलिये, एक जगह बाइबल में लिखा है, कि जो मसीह में है वह एक नई सृष्टि है। मसीह में हमें एक नया जीवन मिलता है। पुराने जीवन को उतारकर, हम उसे पहन लेते हैं। जब हमारे कपड़े गन्दे हो जाते हैं, तो हम नहाकर साफ़ कपड़े पहन लेते हैं। ऐसे ही पाप से मन फिराकर बपतिस्मा लेने से हम मसीह को पहन लेते हैं। जब मैं किसी को बपतिस्मा देता हूं तो मैं अकसर नए नियम में से कुलुस्सियों के तीसरे अध्याय में से पढ़कर उस व्यक्ति को समझाता हूं कि बपतिस्मा लेने के बाद उसका जीवन कैसा होना चाहिए। यहां हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है----इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, दुष्कामना, बुरी लालसा, और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है ---इन सब को अर्थात क्रोध, रोष, बैर–भाव निन्दा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत अतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरुप के

अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है । (कुलुस्सियों ३:१–१०) ।

सो बपतिस्मा लेने के द्वारा हम अपनी पुरानी ज़िंदगी को उतारकर उसके स्थान पर एक नई ज़िंदगी अर्थात् यीशु मसीह को पहिन लेते हैं । और उसमें बने रहने से हमें यह आशा मिलती है कि जब हम इस जगत को छोड़कर जाएंगे तो उसके ,द्वारा हम पाप के दन्ड से बचकर स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाएंगे ।

सो मैं आप से यह प्रश्न पूछता हूं, कि क्या आप ने परमेश्वर की आज्ञा को मानकर उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह को पहन लिया है? यदि नहीं, तो क्या आप ऐसा करना न चाहेंगे? अभी मैंने आप को एक उदाहरण देकर कहा था, कि जो टिकट लेगा वही गाड़ी/ में जाएगा । परन्तु गलत गाड़ी में बैठकर हम सही जगह पर नहीं पहुंच सकते । आज ऐसे बहुतेरे लोग इस संसार में हैं जिन्हों ने बपतिस्मा मसीह में, अर्थात् मसीह की शिक्षानुसार नहीं लिया है । ऐसे वे लोग हैं, जिन्होंने इन्सानों की बनाई शिक्षाओं को माना है, यद्यपि ऐसा उन्होंने अज्ञानता में किया है । (मत्ती १५:८,६) । जब वे कुछ ही महीनों के बालक थे,तो उनके माता–पिता ने उनके ऊपर पानी के छींटे दिलवाए थे जिसे उन्होंने बपतिस्मा मान लिया था । पर मसीह ने क्या कहा था? उसने कहा था, कि जो सुसमाचार को सुनकर विश्वास लाए, वह बपतिस्मा ले । (मरकुस १६:१५,१६; मत्ती २८:१६–२०) । इसलिये जिन्होंने बचपन में पानी का छिड़काव करवाया है, उन्होंने मसीह का बपतिस्मा नहीं पाया है । क्योंकि मसीह का बपतिस्मा, जो उद्धार पाने के लिये लिया जाता है,विश्वासियों के लिये अर्थात बड़ी आयु के लोगों के लिये है । और जैसा कि हमने देखा है अपने पाठ में, कि मसीह का बपतिस्मा पानी का छिड़काव नहीं है पर जल के भीतर गाड़े जाकर उसमें से बाहर आना है– और वह मसीह के मरने और गाड़े जाने और उसके जी उठने की समानता है । एक और बात याद रखें, कि जब कोई व्यक्ति सचमुच में मसीह की शिक्षा मानकर बपतिस्मा

लेता है, तो न केवल उसे अपने पापों की क्षमा ही प्राप्त होती है, जैसा कि प्रेरितों २:३८ में लिखा है, पर उसे मसीह अपने उद्धार पाए हुए लोगों की मन्डली में अर्थात अपनी कलीसिया में भी मिला लेता है । (मत्ती १६:१८; प्रेरितों २:४७) । यानि मसीह का बपतिस्मा लेकर कोई भी व्यक्ति किसी इन्सान की बनाई किसी साम्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य नहीं बन सकता । क्योंकि बाइबल में हम किसी भी साम्प्रदायिक कलीसिया के बारे में नहीं पढ़ते हैं । सो यदि आप सचमुच में मसीह का बपतिस्मा ले लेगें तो आप एक मसीही बन जाएगें और मसीह की कलीसिया अर्थात मसीह की मन्डली के एक सदस्य बन जाएंगे । यदि इस बारे में आप कुछ और जानना चाहते हैं या इन बातों को अपनाना चाहते हैं तो मुझे आप का पत्र पढ़कर खुशी होगी । और इन सब बातों को मानने में आपकी सहायता करके मुझे प्रसन्नता मिलेगी ।

मसीह के सुसमाचार के कारण, आपका,

सनी डेविड
बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली ११००४६